

# हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय इलाहाबाद

# My fragul, some.

H KIRÎX E

PH HG

HALL HEAL (ALSA)

सम्बद्ध । १३ देश

TITI ME

( श्रीराह् सामायत-माहारमा )

इं.संक भी प्रस्टन ही बन्नवर्ण

मकासक मंद्रीतेन ५४न, मॉनप्डानपुर ( सुको ) म्याग

त्रथम संस्करण ) मकर सकांति २०३८ | स्योदाबर २/ ४: है । २००० त्रांतवाँ । जनवरा-१६८२ | स्योदाबर २/ ४: है ।

सुद्रमान्यः वज्ञानमान्याः प्राप्तवन प्रेम, द्रश्य सुर्द्वेति गाल्य ।

p B

अंग्रहत् महोता ( सारक ' क्या गिवस्त्या

प्रसित्ती हुई है से १३ तर । १. उपन शह में प्रतिन्त, वहा, गाडमाइपी तथा झानुवाररोपर पर सहामहोस्त्र-शह की हाल लगा गुनारा हुई १४ से ६४ तक । ६. हितीय शह, मिल, लग्द, देव हुई के इहार हिए। नावहारी का ध्यत्न, सनकुमारों द्वारा नावहारी को ध्यत्न हुई १० से ६० तक । १. एक्ट्रिय के क्यां मुनाना पूर्व पर प्रतिन्त को क्यां मुनाना पूर्व पर प्रतिन्त को क्यां मुनाना पूर्व पर प्रतिन्त को क्यां मुनाना पूर्व पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को उप पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर प्रतिन्त को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर को वाह सुनाना प्रतिन्त को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर को वाह पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर वाह को वाह पर वाह को क्यां मुनाना पूर्व पर को वाह पर वाह की वाह पर वाह को वाह पर वाह को वाह पर वाह की व

#### Frank Ball

ं, अराष्ट्र-स्वर दुध्ड पर बहुरंगा विज्ञ । २. संक्ति इता । इत्याद्रांचर्यों को स्वभिन्न,हम द्वन 💢 । 🤼 बन्न से बन्न यो अंतिम पुर्व १३ । स्रोधिनयसुनि स्टेंग एस परोसिन् ए । ८ १ : डिन्य यस परीवित पुर ६८। ६, वजाउन ु ४० ८ सहियों और यनुना छ। ६२।८ आं यहुनानो कंप इत्यस्त्यो प्रः २४ । ६. जुनुसत्तरीवर पर कीवन पृ० २६ । ६६, सुबुबनकोवन पुर सद्धावहान्त्रमा पुर ६०। ११. **लताकुंत से** उद्दर के प्रकट होना पृथ् ३०। १२. नारद्वी और मस्तिज्ञान वैराप्त ए० ३६ । ४३. भक्ति सारद, पूर्व ३३ । १४. नारद और इन्दर "इ रूप इन १ १४, जारवृजी हारा सनकादि से कथा घटने र्ने ५,४१म इ० ५५ । १६, नारन् द्वारा अस्ति का उद्धार प्रदेश १६. चंगेलेंह में वर्षु का प्राकटण दृष्ट १६८ । ६८. शुक्र द्वारा माग-वत पात्रा इन ६०।१६, परीतित् समीक सुनि ए० ६४।२० २३'गार ३० ४३, २८ आत्महेव और संत्यासी पू. ६७। २२ के पारे करन हु० ४६ । २३. होतार्ण और साहमत्त्व, पु० ७७। १४. अन्तरेत और भूत्युकारों जेन.पू॰ ८३। २४. सोकर्ण की कथा बाँस् ने वट पर एवं दर्भ प्रदेश धुन्युकारी बजार पुरु द्वह । एक सोक्स these was no conse mist at the Bocci

 हुई अपाप्तर हास हुए। जहान्। जहान्। इन्हरूको स्वाधित प्रदान भगवान्। हेर्

प्रशासक जाका के लाग हाजा है। विस्तंत्र आप प्रशास ना नाहास में स्वार्थित प्रशास का प्रशास का स्वार्थित में स्वार्थित प्रशास का स्वार्थित में स्वार्थित प्रशास का स्वार्थित का स्वर्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वर्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वर्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वार्थित का स्वर्थित का स्वार्थित का स्वर्थित का स्वर्थित का स्वर्थित का स्वार्थ

पत्रणात्र ययाति इतसे प्रमोतमा थे. कि वत समात प्रकार की रामायती जन कराने थे. प्रोड़ी एक की भी जान नहीं हैते थे. इसमें कीई भी नरफ नहीं जाता था। सरकारणाही से गया।

<sup>्</sup>य बहारी मारावन है यह साम मुख्या है, त्यने भवागपता रहे तेन महिमा है। यह वेद ने सर्घ है इसने उसम महीत उरेगात हा न यहिन है। इसे द्वेगान रही भवमान देखान में हमारा है।

न्तर प्राप्त सेवाइनामी के लिए की आती ने रेस्सकी का नित्त प्राप्त प्राप्त के नाम के लिए की नित्त की नि

प्राचित्र विश्व ति है। यहाँ धानों भगावों भवा वें
पूर्व विशेष के इहाँ पहले का नारपंत्र इनमा हो हैं कि नाटक
महारात अवति के नम्य में भी के ताम ना शहरा-काम होते हैं
तो पूर्व नथा पहें जाते हैं। एक हम्य माह्य तोते हैं, जो रक्ष्मण्य
पर नम रहेगों की दिशान हैं। एक इस्य माह्य तोते हैं, जो रक्ष्मण्य
पर नम रहेगों की दिशान हैं। एक इस्य माह्य तोते हैं, जो रक्ष्मण्य
पर नम रहेगों की दिशान हैं। एक इस्ते वित्ताक्षणं होते हैं कि
वात्र समझ्य दोशा अपने कापकों मृत जाने हैं। एक दान
यहाल में एक "मील के गोरों का कात्र बार," साहक दिशाया
प्या , साम एं ईश्वर वन्द्र गी विद्यान गाह भी बैठे देख गई थे।
जब नोत्र शीत ने शत्र दुर्ग पर साह्य वार करके सबद्यों को
मान होता है। हिंदा गां। तय विद्यान गां। पर नहीं रहा गया।
पर गीरा शीरोज का पाठ का रहा था, तको बह इनकर हिंदों से
रोज गीरा शीरोज का पाठ का रहा था, तको बह इनकर हिंदों से
रोज गीरा इंगाया है, कि इन्नेंक उस इस्य की सम्या समझने
सी

नारपति नर नहीं के किये हुए हरस की नातक कहते हैं यह गए रहा में संस्कृत अपना शाकृत साथा में उसे हुए कारण का देन हैं। नाटकों कर साहितियक हन्यों में बहुत कुछ लिखा हा जुला है। नाटकों के नाटक, प्रकरण, भाज, प्रहस्त, विस्कृत्यापेण,

到我有美语一样缝 聯委 多点接触,她强逼我 第一点,到过少,可严重。 सार्वेशकारक, राष्ट्राम उपलब्ध, स्रायः, वार्त्वता, राजनः, धनावसः, भी मन्दित, कार्यक, वित्तारिका, मुसीनका, बकाफो, प्रवसीय स्था भागके आदि भएए या स्थापक एस ने आहेल सेर हैं है हुन इन्ह हे समुद्रम् हो, विश्वे लगा को या सम्बन्ध हो. जिसमें योग क्या केंड्र में, देश रूपके में । मानोन दासीका से सावर को परिष्याप बराने तम बादा है—जिसवा सामव प्रमान हो। इसका हो, बमनव हे और शकदि हुए से सारक गुफा है। सेला मी जिल बाम्य का बाक्य हो। जिल्ली सकु में और पहर सम्बद्ध हो तथा सम्बद्ध हो। दूशको के बद्ध प्राणः ने िंदिया भागवेशक सुन्दर हैं। डिस्स्में सामा हमा डेस र है। अनेस द्वनियों से दराज तथा अनेस समियों के अवीकात है। वेप राकार इतनात बाइरिक्से आ माम माम्ब है 🏸 वन रापन चलें जेश्कर के ही का आहरत भागाओं में ही। अनुसा पुराव प अवस्थित। में ती । उस समय में (४ वाहन भावार्य वीत्री जाती की : ६-मागर्वाः ६-मावस्तिकाः ३-मान्यः ४-मोत्रनेनः ४-कदस्याकी, स-वाहीका, अन्यानिकामार वे स्वान के प्राचन की र १-समान र-कालेर, उन्यानान, ५-स्वय, ४-स्वेप्, ६-चींद्राया, चींत उन्दर्भावकः वे जात विभाग है। ऐसे वे १५ शास्त्र भाषाचे की। १-वेदेवी, इन्होंकोल, इन्कारची ५-पाकाल, ६-मारको, ६-स्टिब्री, क्या ४-अपवेदी क प्रत्यान कर साती थीं। :-वेड शी ६ - नामधी ६-नार्ट, १०-इस्कोदी १-

अव्यानीत्यनाथ्यां रणमां र व्यक्तिमोद्ध्याः
 माद्वां भाकृत्याधितं तमाद्दे सन्त्युवात्भातः ।
 वावाविक्रयमुख्यं व्यक्तिम्मदाक्षां गाः
 व्यक्तिक्रम्पायं व्यक्तिममदाक्षां गाः
 व्यक्तिक्रम्पायं स्वतः क्षितं समाद्द्यम् इनम्

विद्याद्द्यायं स्वतः क्षितं क्ष्याद्वयः इनम्

विद्याद्द्यायं स्वतः क्षितं क्ष्याद्वयः इनम्

विद्याद्वयः ।

्राया । वार वार्या का व्याप्त के व्याप्त के के के स्थापता नाया का पान की कुन पान नावारों में साहता कि में माने के के सब का पान के बाद हो के कावने-छावने कादा में साहक खेल्से के क जावार का कार्या वारवायों, विश्वित नावा-सामी निर्मान मानि-के का को को बहु नहीं का के के हैं।

्रेशक मृद्ध है। जनकि पृष्ठ पृष्ठ प्रकार के सावकों की वृद्ध है। विद्यान में हैं कि विद्यान स्कार महास की विद्यान से का प्रकार कर महास की प्रणा के प्रकार महास की प्रणा के प्रकार महास की प्रणा के प्रकार महास की प्रणा कर साव की प्रकार महास की प्रणा कर साव की प्रकार के साव की प्रणा कर स्वार की प्रणा कर साव की प्रणा कर साव की प्रणा कर स्वार के स्वार कर की प्रणा कर स्वार के स्वार कर की प्रणा कर स्वार के साव कर स्वार कर की प्रणा कर स्वार के साव कर साव की प्रणा कर स्वार की साव कर साव की प्रणा की प्रणा की प्रणा कर साव की प्रणा कर साव की प्रणा कर साव की प्रणा की प्रण

राज दी राजन भी नाइकों में ही कानी है, किन्तु वे आंखणा सम्पर्ध में नार्णवक रनश्चेत विन्यवान बोने में शबेब हैं।

नप्रति वहां हुन्यावन में याने भी राल मण्डलियाँ में जो देश परदेशों से बालिनय करके दर्शकों का मनोरखत करने मिकि भावता जायन परनों हैं। जो जीकृष्ण की लीना करें ने सभी भावता जायन परनों हैं। शानदाम की बंदिया चाहे छोड़ी हो या पर्वा लगा एवस प हैं। शिर भी हमारे बुन्तावन में तीन रास सावशिका विशेष यनिद्ध हैं (१) भी स्थानी दर्शाविन्द्जी की, (१) था रव भी सामन्दरूप जी यानी तथा (३) भी स्वामी कुनर पानवीं सभी हो। इस नोनों से ही मेरा स्नेत्रिक सम्बन्ध हैं, नीवों सावशिका प्रारक्षित संक्रीका हरने हैं। स्य त्वन भ्याना राष्ट्रक्य प्राप्त को सर्वे अस्त विस्ति। ज्ञासार

#### \$150.70 FAX

रीक्षास्य प्रदेश वास्त्र क्षण्यात्र स्थापन क्षणा स्थापन विश्वास । स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन

प्राप्त दलक जार था सुरस्ति से रक्ष देशिय समि एरे सा ार्स है। जनवरी १४ वें जन्मा प्रदेश में दिस . जनपन स्तार ्ड्रक स्टेंड कंपूना, की प्रदेशक संवदित राजा है। या राजा ता दोदगी । श्रीभद्धारावन भी हा सम्बोधन सामा देख ही प्रवास प्रशास की अपने दिखा पूर्व दिने प्रसाद प्राप्त है। न वक्ते इक्का निरोधन अभेगुरुष समाप्त के प्रवाद नार स्थाप ब को नेपाले समय गोर्ड का साथ के दिन पेपाल की है। पानी जि बहु प्रमुख्न केकी कीत वर्ष काय एके पुरुष्टित अल के प्रशास अही माहण्या की प्रशास कार शिक्षे का प्री ि के हे की है जिस यह जीता है जान। जब जहां है राजिन नेवर्गी कर्म प्रसङ्घ । प्राप्तां ही सहस्य सेवर्गे भी निवे रार्थ, तब ही रह पहेंगी। धर के लिखे गह नहें यन रेपार जोर बह सोका मदेव में सी पहेंगी , बुसरी लेखरा सुराग गत बरी अवैकी बारो कारन कार देवे की पूर्वता कार राही है और ्वको समय ह सिति कि यह कोन्स पायल कु नाव हु है जाने। भा को मोध की प्राथमा है , २२ (दुस्स्था 🚅 नव गावर्गन गुहरान में हे बंध हिसानवर देश नहीं १६ जनवंदी देश तक राष्ट्रिय सन्द धरेश में लीजा हैं इनहीं दिनन में कागद लिगिने शा जान नी मान्यस्य कृषा होयगो । कृषा एक प्रदान करें ।

कारको अपने हा राग्यस्य

इस पत्र के पाने ता भेज पदारायन-सविधा। सामज विद्यानः

शामकर का दिना क्या समयन क्रम से वह ४—१ दिन में पूरा करके रामानका के राज पहुँचा दिना। और यह भी जिस दिना है यह अब बीरय हो नो किन्न देना इसे छुरा भी देंगे। करणे न्यापूर्ण आन पर हमने हमें छुपा विचा। औ स्वामी कुट्य एक; मानी को यहीं नकारे स्वामी आपम में भण्डली सर्था नाम्यान कर पर्व है, उन्होंने कहा—में इसे पहिले ही राधा पर प्रमाणित करके सामकी निसाद पदि बाझा हो हो?

र १ वर म.६ स केश बना अमें री मृशिक्ष कलाकार बिहान राजा राज्य एएएक या करा कराते हैं। जैसे तो बिराक्क बमें मातना में रीते जिल्हा है। ए राम प्रमानी होजना हो। सही। मार नहीं नो कुनका है। सही। एएक्के ने इसे स्थीनार किया हो ऐसे ही स्थीर हो जिल्हे जा नकते हैं।

अंतराम

ठंक :श्वेंगी संगम में संकातन भवन शुक्ती (प्रयाग) दीयी प्रयोग २०३८ वि०

तसुर्च वसवारी

· 大學女皇也不是不是一世年五年 THE PLANT OF THE かなる かみ ちが ない あい かい かん かかか

#### 为不可言可

य व मुक्कि प्राप्त कृति व्यवस्था ने सम्बद्ध कर राज्य र प्राव्य श्राप्त प्राव्यक्त महाना महाना है .

# HATTINET

# 4

वात् समारत सम्ब स्टर नः संस् नामः नाकहान हो बुद्धा वहाँ नह मांका गाया क्रम च्यारण हेतु सन्दर्भ देव बन्धसी। व्योव पावन अनिन, मील मार्गा कामायी । मुन्दो इत्त कुछ हरन दिन, एक हव दर्वने किरो : रार-कार बन्दल रहते. सङ्गतसय कराह सर्वा .

# [ वर्षाको हो और देखका ]

खहा ! आज त्रीको की वर्ष की इही , स्रोके से प्रायः समा इन है, शीमद्भागवत की गथा के नेगी है, मन नेगी है, भावना के बाल-जात है। माल लंड देना श्रायनगर हो हो इस पातृहर जन्मों के संदर्भ शब्द के सायद (साय हा ) किन्तु अभी महाका मी रहा ही नहीं )

′ ¬, e

The state of the s

सर- गरानुग व 'से सेनुर्यक्षित हैं, कवा काद्या है ? जान गरी दिस सामक का अध्येखन करता है ?

मन्द्र र न्तुन प्रदेशी की देख वहीं वहें हो । इसमें प्राया सभी भगवा भना भगवात है। जबके सम्मक वर तिबक्त हाये है, बाय से मान्त्रों के प्राप्त के सुमञ्जर नाम है, मान्त्री के बीच गर को है सामुख्य की सद्भावत की प्राप्त के सामुख्य की सद्भावत की प्राप्त की की मान्त्री का नाम मिल्लाव की उसे प्रयास का रहे हैं। जान की प्राप्त का रहे हैं। जान की प्राप्त का रहे हैं। जान की प्राप्त की स्वाराध्य सम्बद्धी जानिक्य है साम्राप्त है।

मक्षार-नायुवाह । प्रस्थवाह ! ध्रम्यवाह ! तुम्हारा तुम्ब पर स्वर में उर . में भी प्रशी वाहता था। यह साटक दरीकी के अनुवाद ने हैं। हों. काल इसी का क्षिम्बय हो। शंप्रद्याय-वन जीए अंग्रेड एक विकाद हैं। साग्वत श्रीष्ट्रिय का स्पत्तिम् वाह्नस्य स्वरूप हैं। इस्टी का श्रीविषद हैं। यही साटक हो।

#### हल्य

शहन स्थायन साहि विराजे कुरण हुए। करि। मण्डार्ग जिह सूर्ति कुण्यही प्रस्थ रूप घरि॥ कना भागतन संगत शीफ सन्ताय सिटाये। १९०० काराने क्या ३०० पर्शति इस्ति॥



अन. पान्धित नेस्ते, पाट इस णयक (एने) १ तुनि नार्षे परश्यम्, सुनिर्देश्य परश्य करे। १ स्थादार मार्गार्ड

ाट---वाको ओह क्ष्यते हैं। के अप भे भे अप सङ्घान गृनायों देना है। साम सामाया सुनना वे . )

#### 

सपुरा तंशित लाक में नवारों नहीं एकते प्रसु प्रेम-प्रशेशिकों हारण बन्द का क्षतारों । सर्ग्यामा कर नर कार्य भूर भ्रम्पन् पार्था, स्वय लेशिकों विद्यारों। में स्वित्तार्थी किले सन्तारण, सर्ग्योद्यावतारों। सर्ग्याका सम्बद्धीय क्षत सही ये कीथी, ''स्वयित' स्वयारों दुबोधाकी स्थाद सन्द्रायों, कक्षत्वहाँस दार्था । तर्ग्याक नित्य वहीं भ्रम्यान कहीं ये, स्वयित दुर्गिनित प्रथात। समुना बहाने सर्ग्यान कहाँ ये, स्वयित द्वारा सन्तारों। सर्ग्याक

तर पुकारका है, आहा, नहीं रानी गानी ही पहीर्या करता. अला, यह गाने का समय है या अभिनय करते हा है हो। त उसीह क्लिने उत्सुक हो रहे हैं, आऔा रेगमझ पर ।

'बा रही हैं' इदने हुई नदी का प्रदेश'

नव---काल में। कारणीयक अनी कनी मी, मानी वर्ड-नहें युनाहन होरे ?

स्टी-हर समय की हना शनहीं नहीं। समय देखकर शत करनी वाहिए। हों, नो क्या काला है, जान कीन-सा क्यिनंत्र दोशा?

बर—छात्र श्रीमद्भागवन साहातस्य पर तित्वा श्री श्रहणपश्ची सहाराच दर "छारावन सहिन।" नाटक दर श्रीमस्य होते की शान है ( महा-राज्यात प्रदेश प्रदेश प्राप्त हमारे अभी पानी व उसे स पर तिया है। श्रीक संस्कारी यह बाटक अनुसा है, किन् रत महत्रामित्री से हैंग सुरंग पार्यामा है।

मह--रणें प्रार बाट है। सक्तियों में हुम्हारा क्या विवाहा है ' नहीं - मेरा विचार क्या हिलाईरी । पेरा तो ने किन्द्रवाक सी वहाँ विवाद सकते। किन्तु होत बड़े बीरस हैं। सनकी मीरि एको प्रकार सार्वा । सरसदा या साम सर्वे । सारियों रे देने बच्चार होत्र हैं केले सोध किस्ता। परसः

T- TEM FRE

टा-वर्ग कि समझल् का गुणगात करते हैं। देवे भी सही, इच्या प्रेम में नायत गांग है, रोते हैं, चिल्लाते हैं। कथा-चीतीन करते हैं। हम लोगों की नहीं, भीक भगवती से श्रुति करते हैं. इस की, बसवल्सम की महिमा गार्ने हैं। भारतः है। हो तो सामक्त महिला का हो योगस्य हो। र्शान का अक्ट स्थान तो बनसरहत ही है। नपरा प्राची-दर प्रजनपद्दल धन्य हैं. जहाँ मस्ति निरंग में नृत्य करती स्टार्ड | यहां सहारा हो यहाँ ।

िनंद और नदी जाते हैं पर्श ५१ ग है 🧃

भरूप सागवत माहि विराजे कृष्ण छत्र स्वरित बाष्ट्रम्यी जिह सूर्ति हुन्य हैं बन्ध रूप यरि !! रूपा भागवत सकत शोक सन्ताप मिटावे ॥ मुन्द सरसर्वे सतत कृत्यपद् प्रीति हडार्वे ॥ यानी प्रति दिन प्रेमते, बाद करें पातक बिर्ट । वे पुनि पार्ने परमपत्र, सुनिन्धं अब बन्धन कर्ट ।। 7

मार्थ समायन बरम क्रमण नव शीश नवाडू। शहरूम ही इन्न वहाँ वह बहिता ताउँ।। त्य इद्वारत एतं त्यकः ६३ तन्यत्। कोट पावत परित् संच त्यकः इदमादः। मुद्धी करण दुख हरून हिन. पशः कर परित्रे विद्धाः। भारत्या बन्नत् वर्षः, सहस्तवय साम्ब स्टी ए

Summer ( ) 1 Superior

#### मञ्जूल-मान

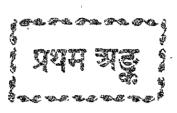
सनन्द पत्र विनिद्ध होत्रा गाउँ हैं, स्थाप में अपनी होती हैं। अभिन्यास्थन अवर्ता

> भागवत यांक अमृत पीते । भागवी सा विविधे सीते ॥

इथ पे सागर है यहुबल, यहे इ.इते लिल पर अधितर : प्रमात सुन्य वहें एमाडे लिल्ड तिनाई दो-पेक तिन नीते (१६६) नामको रसका करियें गाम. को मन में इस असी प्रमात : लगत निराहें सब थन प्राथान, इस्लाई कीर्मन निर्म कोर्न (१४६) यादि जब चित्रनिक्ष आर्थ, पुत्रक ततु सबरें। है नोर्ने । प्रेम सब बाद्धतिमें छाते, यापमें अस्त रहें मीते (१३) हिरोपें बंद भित्तको रस्त, भित्त भक्तांतको जित सत्यक्ष । काल मब करें इत्लाहित बाह्न, त्रमध नर जीवन नोर्ने हीते (४)। केस काढ लगतें सब गाको, यार भन-नामर है जाको । बहुम-पर रज प्रमुक्ती पाको, आर्मी भक्तान्य बीजे (१६६)

ं सम जाने हैं, पहला पर साहें 🖠

ALL THE



#### र्द्ध प्रथ्म

स्थान-मथुरा का राज्यका

् सहाराज इजनाभ अपने भवत में गरान वैदे हैं। तभी द्वारपास ने आकर प्रणास करके निवेदन निया :

डारपाल-प्रमो ं क्यों-क्यों एक यह ने व्यक्त नस्ताह हिए। है. नहाराजाविक्य परोस्ति को स्वारं दिसने का रहे हैं। चौक्ता एकागाज एक्सम ने कहा--क्

रहे हैं। चीतवा स्थानात यक्ताम ने कह---वर् रेकी यात है। तम सीक्ष वर्ग दुर्गित्स सर्वियों को बुलाकों। स्थाने चलकर महाराज का त्यान कारत(है)

( डाग्यान मोद्रता में शाना है पुरोदित मध्ययों को शुहाना है. स्वापन का ममका मंसार एकदिन धरता है और मुक्क नाकर प्रदागन से विवेदन करना है )

हरपाल—प्रयो ै स्वागन का सभी भामान समुपरिधन है पुरीहित गर्न्सी, सवागाप की प्रतीचा में खड़े हैं।

बन्नतःस—स्त्री दलें ।

[ महत बायों के सहित एक मी को आये करके सभी लीय महाराज परीतिन की अगयानी करने नगर से चाहर जाने हैं! सहाराज परीविन रक्ष सं उत्तर रहे थे! बजनाभ मस्तक सुकाकर प्रमुक्ते चरणों में क्रांस्वाहन करते हैं। महाराज परीविन उन्हें ्र प्रस्कृति अस्तर स्था क्षेत्र प्राचन है ज है है। एक क राज्यार के स्थानर सभी क्षेत्र प्राचनहाँ के है है। राज्योजिन श्रीकृत्य प्रस्कित का क्षित्रक करते हैं।



[त्यारिक् हारा शीप्रक दिल्या की आपर मा] वर्तर्गकृत-राजन ! के तुरहारी कुशल खेस पृक्षते ही सामा है ।

पुन प्रमान ना है। देखां नुस क्रिमी प्रकार ही विकास नहीं करना । नुस क्रिमी नुस प्रदर्श हम स्थित की क्रिम ने निका सहते बहुता । नुस्हारी नुझ प्रदार की बना प्रभाग करने बहुता । नुस्हारी नुझ प्रदार की बना प्रभाग करने सहता है।

वस्तास ने विनोत्र भाव से करा—सावाजी । जस स्माद हरारे सिर पर हैं, तथ हमें विस्ता किस जान की विश्ता एन, सिरना सुद्दे सम्बद्ध हैं।

प्रातित्नम् इस विकार है

य-आपने मुक्त अनसण्डन का राजा तो बना दिय में राज्य किस पर कर्षे ? यहाँ प्रजा तो है ह दहाँ की समस्त प्रजा नयो कहाँ ?

श्रीमहरन उदी परन विद्यु, पानी विद्यु उसी दृष्ट , विद्यु इक्षाश्वकी दिवस उसी, प्रचा विद्या त्यी भूप । यस की बात सुनकर परीकिन् कुछ छाल छोचने उहे भारण करके बोले )



्रकेशक और स्टिन्

--नाम्य ! तुमने अपदी यात् दिसावी । इस उत्तर सहिते प्राधितनय ही हे सदाने हैं । दे ही गोपो के पुरीवित यह है। के यही कही ही कृष्टिया बनाका रहते हैं । उन्हें कुल्कान वर्गा

ा मण्युति-च्यापुरस्य भवे, छाणुरस्य **सव्** । स्टब्स 李四 微系统数 化工作性性 高度量点



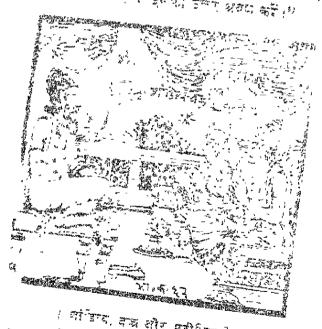
र्रेमारोज्या कृति क्रीय प्रावृद्धिन् वराप्रीक्री

स िक्ट र प्रोट - महार स पर्योच्य । एवं भ्राप्त अससीन । नाव देशों सहस्त में हैं ' हापनी नहीं विश्वति । विश्वति । विश्वति । विश्वति । विश्वति । विश्वति ।

हरका पुरार्तिकी जनकारिक । अस्तिक्य क्षित्रं स्ट्रांटिक स्ट्रांटिक

रिवन मुद्दान है। वस्त्रमात्र कृ प्रजास प्रकृति के कि कार स्वार स्वार स्वार स्वार क्यांत्व भी जोव-जान् करो । सर्व 

प्रशासिक के कुछ । हा विसे सुप्रदेश प्रश्न किया आ में में हर की उसरे शहर करें।



। वर्षे इत्यः, सन्त्र शीर परीक्षित् ह

ं. वज और नजेम्य एक ही हैं। श्रीकृत्य का अन् ो होता. सभी-सभी होता है,वे अबनार नहीं सबसारो

स्कार अवतार उन्ते स् १ एवं ११ है। ते ते ते ता से स्वार्थ होते हैं। ता से उन्ने से स्वार्थ स्थान करिय होते हैं। ता से उन्ने से स्वार्थ स्थान करिय होते से स्वार्थ से सार के सार के सार होते से स्वार्थ होते से उन्ने सार होते हैं। ता से से सार होते से सार होते से सार होते हैं। ता से से सार होते से सार होते हैं। ता से से सार होते से सार होते हैं। ता से से सार होते हैं। ता से से सार होते से सार होते हैं। ता सार होते हैं। सार होते होते हैं। सार होते

अस्पान इत्पृहरा से बहागांश परीहित है इसा — भएतन । भरतित् लीका रचलों का ज्ञान ने आप में कुम से अ नारमाः किन्तु उद्ववसी का इसीन समी कैसी होगा ! वे ने बराएन से विगालने हैं ?

सामित्रका-न्यह सद तुस बद्धवर्ती के स्थीन होने पर हन्हों से प्रकृता । मैं नी सब स्थानी कृतिया पर काना हैं .

[ रहतीयुड्स्य जो यह प्रस्थान ]

[ पराक्षेत ]

द्वारा सुनीस

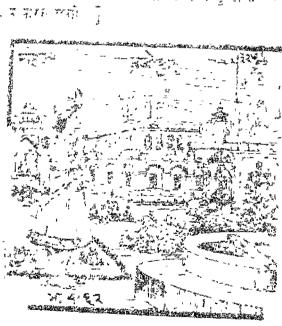
- इस्ति च च्यापा निवास ।

िमशुरा मण्डल काय चौर येन तसी रहा । महाराच पर्वे जिल्

Marian end on this en र स्व राजानने की बुलगका बसा दिया ( हार्

रेगा स उन्हें में स्थायनग्रास २० छन, कुरह, खरीन के दिने क्षा कर में ती है। यह में विद्या के क्षा के

न हो परिषेत्र, कुछन यह के को बिकारनेस खोला क्रफा र रेप्टिंगो सा म्यापना को, चललाखा, बीचे, अति निर्मातिको की स्थापना तो । प्राप्त सप्रवत परा १ साम्रत परस्य अन्तरह हुए । *दिल*्च छीडूनक and the first hand to see the second seconds



विजीहार |

रंद्रमाओं के विकारे औरहाम विकास में की विराध ननमें हो एक राने-संत्रे मारे लगी--

हमें त्रीह भी यही परवर्ष : भव े जावरते दिसु जिह् संस्क. सरो दुसह तुम अतो 🐠 इन्द्रभवत हर निर्देश विनापितः सपुर वैसनि स्वकारी । बार व मित्रा स्वीदृति त्तक. लीका प्रकार स्वारी । स्ट भनसंहर्भके अनुसय जन्मा जिल्ल हरि हेर्स अन्ताः इडवीरी पारत करिनेही, नर्मि वर्ग हम सकी। ३१ दिश्ह विधः क्षेत्रकि वित्र हिन्दुरें, हार्यश वित समें। रेन्सि रहति रेकि किन अगद्यः निर्मा कुस्यित्यमे १५००

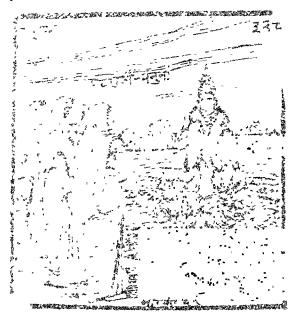
ह्न वन तुन्यों सिंह्यों योन्स्यार याने नया-

निर्दर्शन सिर् प्रति-पृति परिनार्व :: हि=-द्वित एस-२ल झोलॉन सम्बन्धियो याने स्था पूर्व पार्व । सा नः यहुमम्बन यम दिय यन्त्रमः दिश्य हियोः उपनि । कव संसार मुन्द मम लागन, तुन्दर हम्म द्वितार्थ ॥%। रेति स नींट मुख लोहें बालर, बिस्तम वही कहायें। विकल बावरी विरह विधाने, कब की घोर अंगार्व । ३।। सीतल खरस मुख्य हुत्त्र अति, पर हिम अनत हुमारि। द्वर सरोज में दान होग भित्त, मुखद चरन सुन्नि आर्थ (अ) भिवनस प्रस किना मंहन स्द, विलक्षि-विलक्षि रहि बाबै। प्रमु इसाइ विषु दिया जानवति ! कुरनी सम स्करावे ॥१३

ृश्स पर दीवरी महिणी विजल-विलवकर शाने तथा ;

#### 

दिना शियतम यह जीवन भार। द्विस इट्ट अभूरो आरी, इस्टि जग जीववार १५॥ ्या प्रताप साम पर्यासी, वानवाँ सुन्दर । हा प्रशा करान गावि की स्वित्ते, कीन विषेके विनय र नाम ने प्रयोजनि बक्कन स्वांत क्यिन्देंसि स्वित्ते स्वेत्यार पान स्वाय स्वत्यार, क्यांत्र स्वांत्र स्वति के एक स्वाय कुछ देन स्वत्यानिति, व्यांत्रि स्वांत्र स्वांत्र प्राचित्र सोण कृत गांत सांत्र विस्तुत्यों असु विस्तु हास न वित्य र सोणीं के इस कियह विश्व सम्बद्धी गोले, स्वाय सो स्वाय हो। स्वांत्र स्वाय स्वित्यों सो प्रमा



ं महिदी छोर देखना ।

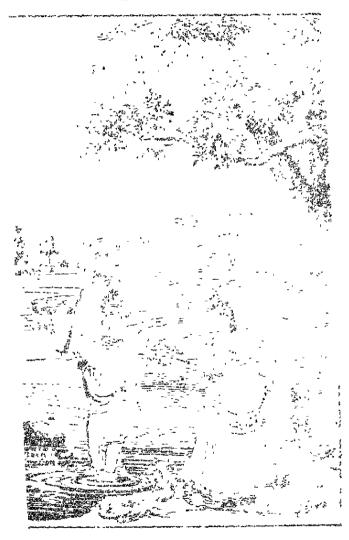
.र पर प्रत्में से जो सबसे बड़ी सहिया वोदिया जो धी अपर से प्रत्ने करों । ]

-वी- न फ्रांनरदी ! मुक्त की हमानी की सौनि प्राणनाथ

ारिया दा । हस इन्हें विश्व से शहन कर वहा है कोर मुस्र देन रही है। इसका क्या कारण है।

— बहिन क्रांगिनकी । उद्वयन्ती के दुर्गन रसे केरी हो। उद्देश । वे की प्राणनाथ की क्राह्म से बद्गीवस स्के रावे थे।

ज्य-देखी, यहिन । भगदन भन्नी की द्रन्हा कभी कर्छ नहीं होती। इद्वन्नी में इन्ह्या की भी में पुरद्यका म शुक्रत्वा वसकर रहें, जिस्से गीपियों की वस्परत उद्व-इङ्कर मेरे इत्यर पढ़ें। बुन्द्यं न रीत हैं, द वेदिन दे मध्य में। वाम पुन्तावत साम पुन्द्रावत (कामपत) एस पुन्द्रावन ( गोवर्धन राजाकुण्ड के बीत में हुन्द्रम सरीपर एर ) भी पहलाजी कुनुमत्रीवन पर किसी जनागुरुम के एप में अब भी एक कर से सर्वास्थित हैं। दुन्दें कुप से दे बद्दीवन में भी हैं। गाउन प्रस्क गिया हैं। उपास नी रहव का स्थाप हैं। दुस उस



िसंप्रमुक्ता और सीहण सीता है। असी र स्थावन सन्देरे की सारी सीड़ इस्टीटन हो ;

योगा वेषु मुरङ्गादि यायों से कोर्तन हो। तह पहुनमो पकट हो जापेंगे।

#### 77.74

2

पृष्टी प्रसुक्तः विया-सितां रह्मवां कैसे।
यसुना गालीं-सुनां, इटार्ड सिलिहें जैसे!
करा धरि इक रूप वहिस्तानमें दिरुता।
भक्त रूपते सना गुरूम दिन हजमें नियमक।।
उत्सदहों तिनि रूप है, उत्सव विय रह्म सनक।
इस्सुम सरीवर्ष विस्तु, उत्सवने रह्म सिका।

अदि स्रावन सक्त कृष्ण हुन नार्नात गावै! वीना वेंतु स्वज्ञ स्वीरा मयुर बनावे!! कथा को क्सनोय कृतिन कीर्गन करि करदन! नाम निरन्तर रहें रसन राधा नंदनन्तन।! प्रेम सुबन्धन डीरिने, निर्मय प्रशाद है नार्यो!! कथा कीरतन रण्युते, उद्धवनी वेंथ नार्यो!!! [यसुनानों के बचनों से श्रीकृष्णसंदियों परम प्रसुद्धि हुई! होन सहतों में जाकर प्रीकृत तथा वक्षनाम से कालिन्दी की नी नार्ते कहीं। उनकी आजा से प्रीदिन और वक्षनाम कृमुम रीवर पर महासदारसव करने की तैयांग्यों करने लगे!]

> यहाक्षेप चतुर्थे दृश्य

िस्थान—जुलुस मरोवर है। [कुमुम सरोवर पर महामहोस्सव हो रहा है। दशों दिशासी से भक्त गुन्द का रहे हैं। कांई नाच रहे हैं, कोई गा रहे गाल मिला रहे हैं, कोई हंस रहे हैं, कोई रो रहे हैं, की तेन कर रहे हैं, कोई पड़ की तेन की धुनि में मस्त है कोई लीला की तेन कर रहे हैं। चारों कार रस की रही हैं। बाताबरण में सरसना छाई हुई हैं। संकी तेन की ध्वित से बाह्यशा मण्डल गुंज रहा है। मिला मनानी भय परित्यान करके लुन्द कर रही हैं। सबैत उल्लास छाया हु मण्डलियों के अपन मण्डलियों का रही हैं]



( इनुस करोबन पर कोर्ड के ] एक मण्डली पर ग्रही हैं, उसमें सभी भक्त ताल स्वर स— "ओक्ट्रण गीविन्ड हरे मुगरें। है सार्थ नागायण वास्त्रेत्र );"

नायों वा कमनीय कीनर कार्त हुए साम मु ६ ला



हिंगुम बर्धाल कर बड़ा प्राप्त करें।

दूसरा सण्डली यातो है वह —

हरं कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम बाम गम हरे हरे।। इस महामन्त्र का कीर्यन कर रहे हैं— तीसरी मण्डलो आली है वह—

> राजाबर जय कुझ विहासी। सरकोधर गोबर्धन धारी॥

इत नामों का श्रीनित भूम मूस के कर रहे हैं— कीथो सण्डली अपनी है जह—

> राधरवास राधरवास स्याम स्थाम रावे गाये। राथ कृष्णा राचे कृष्णा कृष्णा कृष्णा रावे गावे।

इस नामों का खोर्नक कर रहे हैं। संघ रहे हैं राए रहे हैं सा रहे हैं सुन

वांबर्ग कान्ता कार्नः हे--

कीरीन क्षर्या हुई। कोनेल दरने वाही भक्तरण तान स्वर् सिन्धाकर खन्धर स्वरं में पड कोनेन गान दर रह है।

प्रवेश सद ना स्ट्रस्ट स्ट्राइट ।

कृष्णचन्द्रके तुम द्यांन ध्यांने, मन्त्री मित्र कहाको ॥१॥ रिष्ट्य दंवगुक इतिमान कति, प्रमुक्ते मन क्यति माको । माला, गंथ, पहिन पर प्रमुक्ते, सीन प्रपादी काको ॥२॥ देवसाग-सुन एपिइन कानो, श्याम सहस्रो ताको ॥३॥ बाद्या सम प्रमु सात रही निन, सनकूँ सीन्त्र सित्याको ॥३॥ बह्गीदनमें दास करें प्रमु, क्यायुप शोगा चड़ाको ॥ कृष्ण पादुका पृति प्रेमले, हरि सामनि नित गाको ॥४॥ गुल्मस्ता वनि वनमें विद्रो, नजरज नन तिप्रहाको ॥ एको एको प्रमुट होदो तुम कृष्ण सम्बा अव बाको ॥४॥ परम भागवन पूर्णन रहत्व. नांच इसव सुद्ध पाओ। श आशो छाओं वजनन्द्र प्रिय. भगवन कथा सुनाओं । दा। इसी सण्डली ठेट वजनासियों की आ रही हैं— वे टीज दर मझीरा सार्द्धा के सहित नाच-नाचनर गा रहे हैं—

### नसिया

ड बें ! नेरी वित्त वित्त जाड़ें, अपनी दरस दिखते हैं भोड़ । आजा भेंचा सेरे प्यारं, कबके दरमन नितु हम औं । नरित यह मैंना अब सारें।

दे तू दरसन आइकें, नित सनमें सकुचाड़।

तना बुरक नें निकस्किं, मूर्गन मेंक दिखाड़।।

बजवासी हम जला दुखारों गहकि बुताबें नोड़।।।। इ.पो॰

तू नो भेग ! है अनि बानों, तैने अनने अवका ठानी।

श्राह सुन। दे मीठी वानों।।

बद्रोधतर्ने ह्म सुन्यो. बाक्न् निर्दे पनिष्य । त्रजवासी विनक्षे वसे, कुसुम सरोवर काय ॥ इस त्रजवासी तृ त्रजवासी, बुद्धि गयी का खोद ॥२॥ क्षेत्र क्षरे ल डाले बात दता दें, द्रसन देकें सोक सिटा दें। स्थपनो प्यारी नहीं दिखला दें॥

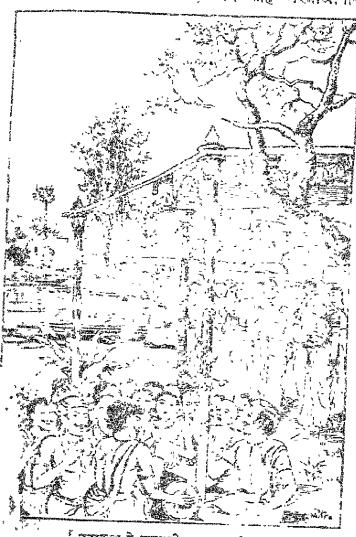
तेरी सूँ अब कहन हैं, बेगि न प्रकट मित्त : हमरे ब्रजमें बास करि, दुखी कर च्यों वित्त !

न्यों नाहें वाले अरे हठीले, कहा गयो तू सोइ। अयो तरी बलि बलि जाऊँ, अपनी नरस दिखार्व मोइ।।६॥ इ.एकं महिला मण्डली आ गयी वे गाने लगी—

क्यो ! फिरि सन्देश सुनाओ ।

पहिले अजमें तुम जब आये, नन्दनेंदन सन्दर्शे लाथे। सीडल खतियाँ तब तुम फीन्हीं, खब फिरि बान बताओं।।१॥ ( 30 h

पहिले तुम ग्य चर्दिक साथे, अचर्ता इन्द्रांतमाति समाय। तुम्त निकसिके लाला आओ, अन काहे नरमाश्री।



[ अताकुक्त से उद्दवनी का अकट होता ]

नुनही आनी 'म.सी हासी, वर्शन नुन्दानी शत पहिरोति । ठलक लहा किया है कर्यों, अब क्यों नहीं विषयी क्या रमक विसादन सब दे व्यासी, हस मस्तियों क्यों मक्यों।। सन्या तुक्टारें हैं अविनासी, काहेश क्रमण्यों।।४।।

[सरते आएवर्ग के साथ देखा जजनामियों की ग्रेम मरी वालो सुनकर गुल्मलनाओं के मध्य में पीनाम्बरधारी उद्धर की निकलकर रार्टा-रार्टा दर्शकों के समीर आने लगे। ये बनमाला गुज्जमाला धारण किये थे। मुख्य से साधव के मधुष्य सहर वासों का गान कर रहे थे। पनके आगम्बर से सभी भक्त समुदाय पनस प्रमुनिन हुए सथा 'क्ष्ट्यक्ष हो की क्य' बोलने बारे।

# usiģa

#### द्वर हुआ

# [ स्यान-क्रुपुन सर्वेवर ]

्षति भे ही निर्मित उच्चासन पर ठहरती विराजभाग हुए।
सहाराज परीकिन् ने नणा बळानाभजी ने उनकी विधिवत् पृजा की। )
उनुव-मृष्यवर परीचिन्! छाज दुन्हें देखकर मुक्ते परम हर्षे
हुआ। तुस परम भगवन्सन्त हो ?

परोश्चिन्— प्रभो ! से तो परस श्रमागी हुँ, न में सगवान के भली
साँ नि दर्शन कर सका, न उनकी पृता का ही क्रियकारी इन सका। मेरे पितामह श्रमणबस्था में ही मेरे
सिर पर भू मण्डल का भार लाइकर हिमालम को
चले गथे। श्रात कुछ मेरा साम्बोदय हुआ है. जो
ध्राण जैसे परम मागवन के दर्शन हो एके। में सकनाम को देखने, राहियों के चरण त्पर्श करने श्राया
था। श्रायके दर्शनों से मैं छनार्थ हो गया।

i the i

पर्यक्तिन-भगवन ! अब हम श्रीहण्य अगवान के दर्शन तो होहें छ रहें। हसारे उद्धार का कोई उराय बताइये।

उद्धव — राजन श्रेमचान कहीं चले थोड़ ही गये। बज उनका रनस्य है, बज को छोड़कर ने कहीं जाने नहीं। श्रीसद्-धारावन में वे सदा सिकाहिन रहते हैं। भारापन सेवन से श्री गंसारी होगों का उद्धार हो सकता है।

परोहिन्—सगवन ! श्रीसद्भागवत के पारायण के के प्रकार हैं। यह विद्यालय जगन् में सभम बस्तुएँ जिल्लासक हैं। यात वन के भी सादिक, राजल और नामस वीन प्रकार हैं। यातिक, पानिक पारायण सान्तिक हैं, सप्ताह राजस हैं, वार्षिक पारायण तामस है। गृहक्षिकों के लिये सप्ताह ही लाभ प्रवृह्हें, संन्यासियों को सासिक उपयुक्त हैं। जह पानिक पारायण परम अनुकृत हैं। में इस सहिषियों को पानिक पारायण परम परायण ही अवण कराजेंगा।"

रोचित्-प्रभो ! सुक्त समाने को सापने क्यों छोड़ दिया ? क्या में श्रीसद्भागवट अवण का श्रीवकारी नहीं हूँ ?

उच-राजन ! आपको तो धीसद्भागवत परमहंस चक्र चूकामणि भगवान शुक्देवजी सुनावेंगे। आप तो इस समय
हरितनापुर में जाकर समस्त प्रजा का पालन करें। पृथ्यों
पर काजियुरा का प्रवेश हो गया है, वह यहाँ आकर भी
कथा में विच्न कर सकता है अतः अब आप दिश्वितवय
करके काजियुग जहाँ मिले वहीं उसका निग्रह करें।
श्रीसद्भागवत के आप हो एकमात्र अधिकारों है। नारह
जी को भक्ति के चहार हेतु समकादि कुमार कथा सुनावेंदे और तुन्हें सगवान शुकदेव । कह आप जाइये।"

ृष्ट व व दे का का वा विशेषा व व के सदारा देशी तथ्य हमको पूजा प्रदा्षणा करके हिल्लापुर चे के एरे। उद्धवर्ती ने एक सहीने तक श्रीकद्यागवत की सरस कथा मुवाबी। तभी वहाँ करने लगे। सन्दों को अपने दर्शनों में कृतार्थ किया। सहित प्रकट हाका कमनी के को हा करने लगे। सन्दों को अपने दर्शनों में कृतार्थ किया। सहित की हाया को उठा ले गये थे। यथार्थ निविध नो तक में श्रीकृष्ण साझिक्य पाकर परस कथार्थ हुई। श्रीकृष्ण के परिकर पापती सहित वर्शन पाकर महिली तथा बजनाम कुनकृत्य हुए। मक् क्यर से जय व्यक्ति करने लगे। बोलो सन्द और भगवान व्यक्ति करने लगे। बोलो सन्द और भगवान व्यक्ति करा है

#### **उ**ःपय

**` Q** '

दोले उद्धर-भूप ! सागवत सम गुर ही नहीं।
सिर घरि दण्ड प्रनास करी परिकरण की नहीं।।
पारायन करि साथ रथामको सखा कहायो।
सचिव सुद्धर सम्बन्धि कृष्ण कहि हैं अपनायो।।
कथा कहूँ कलि कतरनी, भक्त लहि हैं सुख कृष्णरस।
करें परीजित कलिदमन, पानै जगमें निपुल यश।।

₹ ]

गये धाम जब श्यान आइ किल विधन मचार्ष ! विजय दशहुँ दिशि करह तुरत कलिवश है जावें।। कहें परीचित—देव ! कथा मोर्ने न छुड़ावें। उद्धव बोले—तुमहिँ आइ शुक्रदेव सुनावें।। उद्धव आयसु सिर धरों, गये मृण चित दमन दित ! राज-वश्र प्रतिवाहु—सुन, दयों कथामें भये रत ।।

भास दिषस तक कथा मुनी सब संसध नासे।
रास रजित राकेश राधिका रमन प्रकासे॥
सबनि मक्तप प्रचोध भयो नित तोला प्रविसे।
इयोहारिक जग स्यागि खड़ हरिके बनि विकसे॥
गोजरधन उपयन, सघन सुमन कुछ वन-वन फिरन।
दीखत भावक जनित हरि, परिकर सँग विहरत सतन॥

## ्ष्यम् अङ्ग समास् प्रथम् अङ्ग समास



## वितीय अह

#### THE PUR

[ स्थान-कीवृन्दायन यम्ना तट प्रदम हुन ही छाया [ ] [ नेपथ में मुग्रहर महीन एनादी दे रहा है ]

#### W.

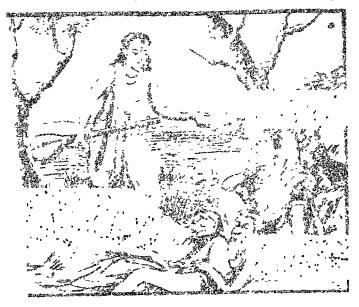
भाग यह हुन्हावन वर भाग ।

जहाँ रास रम रेगमें रेजिन, विहान एएमण्ड्यम ॥१॥
सरम कुछ गुँजन मान दृष्टांग नित्त तहन तिन तहन तहार ।
सिन प्रमान वन-तनमें विद्यान, वहन छिन्त कारियान ॥४॥
कूप हुण्य पांख्य माच्या वर, मास मक्त प्रतास ॥४॥
व्यान सम्य मुग्यिन्य नित प्रता, धर्मा वायु प्रति द्याम ॥३॥
वा धनिता प्रजामध विमाननि सम्य राख ग्रीत द्याम ॥३॥
हँसत-मैनावन रस वरसावन, केति कान प्रनारमा ॥३॥
गीय गाम बनगादि च्यायन, वेतु वजावन रसाम ।
हत्त भूसत ते फिरत मन प्रति, कृष्ण प्रस्तु बत्तराम ॥४॥
गोपी गोष स्वापित गोधन, मचई गोस्म धाम ।
तिन देखां नित गाइ रहे सब, सकुर-महुर प्रसु साम ॥४॥

[ नारदंती का प्रदेश ]

नीमा बनाने हुए गाते हैं-

भजो रे भेषा सब-सबहारी त्याम । रदास साम भवरजकी श्रोपधि, यह ही श्रावे काम ॥६॥ नश्वर तत घर श्रनरशकारी, यह यन नहिं निष्काम । कृष्ण-कृष्ण कहि कृष्ण नाम २८, धारो हिय वणस्याह ॥२॥ में संशंध क्षित्र मृत्य मृत्यो शिका नाग।
छाँड़ि कपट छन अवह भितिल, श्रीहरि शोभा धास ।दी
(स्वतः ही) अहा यही वृत्त्वन है. जहाँ मजबल्लभ नव नेताओं के साथ नित्य शस रचाने हैं. रासस्थली में रस बरसार मजाझनाओं को सरस कीड़ा करके हैगाने हैं. चन-बन में पर शाय चराने हैं, स्वाल-चालों को कमनीय कीड़ाये करने पर शाय चराने हैं, स्वाल-चालों को कमनीय कीड़ाये करने पर सहस्ता की स्थली है। शृहार रस की जननी है। साधुर्य



[ नारवजी और मिल मान बैरणम ]
तेका है। ऐसा रस अन्यत्र हुर्ल न है। यहाँ चारों ही
प्र-दी-रस है। इससे यह रम्रली खोत-प्रांत है। (कान
) खरें, यह नो कीन रहा है, ब्रन्दायन में भी पीड़ा, चर्लें
सहीं, किसी की इस सेना कर सकुँ तो अपने इस जीवन

सार्थक वना सङ्गः। परापकार संवा हो संरा जन है। डांबॉ रमु के सम्भुख परना हो सेरा अनुष्ठान है।

्रिम्सं बहते हैं. मरहास हो एक सपन लना इस को दाया क प्रमास्य जाव्यस्ताती सुवती उदास हैटी सदन कर रहारे उत्तरे सरमुख ही हो हाजर की सबाय ग्रह पुरूप पड़े दीर्घ-र है रहे हैं। नारदजा बहाँ छितुस जाने हैं और इस युवती से र हैं।

तारत्—हेदि ं इस कीत हो ?

उत्रते—देदि ं ते भक्ति हैं :

तारत्—ते हो इद उत्तर कीन हैं ?

नुपती—ये ज्ञान कीर नेगाय है .

नारद्—दिस तुम में न्यों गहीं हो ?

पुष्तो—भुस कीत हो । इनकी समना से पुस क्यो रुद्ध रहे हो ।

नारह—में नारव ह। तुन्दारी कुछ सेवा कर सक् ती से अवने को भाग्यशानी समर्मुण।

युदनी--- अहा ! शाष मत्यि नारत हैं ! मझाओं के मानस पुत्र हो । परोषकार ही स्थापका सन है, निनक उत्तर कर सेरी करण कथा सन जीतिये !

नारद्जो—से टरण हूँ। हो आए अपनी करानी मुनाइये।
युवनी - बहाएं ! में मनन बन में वास करने वानी प्रभु दिया
भक्ति हूँ। अपना प्रचार-प्रसार करने वी कामना से
जनय-समय पर विभिन्न स्थानी में अवनार लेकर
से भगवन भक्ति का प्रचार करनो हूँ। अवके मैंने
वह में में नाकर हविड़ देशों से अवनार जिया;

नाग्द्रज्ञो--श्वित ? पुत्रनो--श्वितामा भी इचित्र देशो से लिया । वहा ४ आवारी ने मेग बड़ा आहर किया। फिर में काणीटक में चर्ता गर्या। बहां संगी इदि हुई। बड़ों हुई। वहां से में सहाराष्ट्र में आयों। वड़ों मेरा उतना आहर नहीं हुआ सेरे इस जान चेराम्य पुत्रों के सहित मेरी एका हुई। फिर में गुजर आन्त में आयी। बड़ों नो में बूढ़ों हो नथी।

सारक्ती-- यूकी करों हो गर्ग ?

युवती—गास्वी विशेष कारण। युक्तरात में अधिकांश कर्य-दियों की एवा वाना है। साधु स होकर जो साधुआं का बेंग बचा तीं, त्थानी स होकर जो त्यानियों का-सा होंग रच तों। ऐसे तोग उस प्रान्त में विशेष युक्ती हैं। यह पद दंखकर से किर अपने बधार्थ स्त स्थान कड़ से का गयी। यहाँ आते हो में पूर्ण युक्ती वन गयी। किन्यू मेरे से हो पुत्र हान और वैगाम्य परस पुद्ध वन गये।

नारदर्जा—ये बृद्ध क्यों बन गरे ? युवती—अजवाती इतका चादर हो नहीं करते। नारदजी—फिर तुम रोनी क्यों हो ?

मुनती—रोने की नात ही है। माँ युवती, बेटा जर्जरकाय वृद्दे। कोई क्या कहेगा।

नारह--तुम चाहनी क्या हो ?

युवनी-चाहनी यही हूँ कि इनकी बृद्धावस्था दूर हो जाय. ये वुषक बन कार्य। कोई खोपबि जानने हो तो बताओ।

नारवर्जा—हाँ, में श्रोपधि जानता हूं , वेद, वेदाङ्ग , बद्धमूत्र, गोना, उपनितर् ये सत्र ज्ञान वेरास्य के पापक है। इसकी कोर्गाव का में कानों क द्वारा इनक इन्क में प्रवेश करना हूँ।"

ती-कराओं साग्द्र ! तुम बहे पराएकार्श हो।"



भारदर्जी ने उनके कान में बेद बंदाङ्ग, र्ताताः उपनिपद् विक्ताकर सुनाये । सुनकर वे कुछ उटे किर अर्चन होकर वि ।"]

विशे—नारकृष्यि उपाय तो हैं, किन्दु युग-युग से उपास बदलते रहते हैं, अब कितियुग हैं। इसकी ऑगरिय स्वोतो।

नार्द्रजी चिल्ला में पड़ राये। तब स्नाकाश वाणी हुई सम्सी रण जाको व नुभी रणाय प्रतायोग । ने सेरा बड़ा छ।त्र किया! फिर में कणीटक रें चलो गयी। चहाँ मेरी चृद्धि हुई। चड़ों हुई। वहाँ से में सहाराष्ट्र में छ।र्था। वहाँ मेरा उतना छ।तर नहीं हुआ मेरे इन ज्ञान वैशाय पुत्रों के सहित मेरा पूजा हुई। जिर सें गुर्जर शान्त में आयी। वहाँ तो से मूही ही नवी।

सारहती-वृद्दी हतों हो गर्या ?

खुनती — पार्वि इसी के कारण । गुजरान में श्रधिकांश पार्व-दियों का प्ता होती है । साधु न होकर जो साधुश्री का नेप बना लें. न्यामी न होकर जो त्यामियों का-सा होंग रच में । पेसे लोग उस प्रान्त में विशेष पुत्र ने हैं । यह सब देखकर में किर अपने प्रथार्थ मृता स्थान प्रज में खा गर्या । यहाँ खाते ही में पूर्य युवती बन गर्या : किन्तु मेरे वे दो पुत्र हान और वेशस्य प्रम बुद्र बन गर्य ।

नारद्ती—यं इद्ध व्यो वन गर्व ! युवती—त्रज्ञवा शे इनका व्यादर ही नहीं करते । नारद्जो—फिर तुन रोनी क्यों हो !

युवती-रोते की बार ही है। माँ बुवती, वेटा जर्जरकाय सृद्ध कोई क्या कहेगा।

नारद—दुन चाहतो स्या हा ?

युवर्ता—चाहनी वही हूँ कि इनकी बुद्धावस्था दूर हो जाय, य युवक वन जायें। कोई कोपिंध जानते हो तो बताओं।

नारदर्जा—हों, में श्रोदिश जानता हूं। वेद, वेदाज हस्तूत्र, गीना, उपनिषद् ये सब जात वैगाम के रोणक हैं। इनको कोपधि को सै कानों के द्वारा इनके इदय में प्रवेश करना हूँ।"

ानी-कराओं बारह : तुम वह परोपकारी हो।"



शारत्वां ने उनके कात में बंद वेताह. गीना, उपविषद् ।-विल्लाकर सुनाये ! सुनका वे कुछ पठे किर अर्थन दोकर प्रे । े

,वनी—सारद! ये उपाय ते। है, किन्तु गुग-पुन में नपाय बन्तते रहते हैं, अब किन्युग दें। इसकी खायि स्रोजा।

नारद्त्रो किता में पड़ गये। तब श्राकाश वाणी हुई सन्ती एण जाओं वे तुम्हें उपाय बनावेंगे हुई

#### द्वाय

बोर्ली मुनिनें भक्ति—मृति उद्धार बनाको।
होहि तुरत बनन्य जुक्ति कञ्ज अपर त्रायो।।
गोता कर बंदान्त मुनायो नहि ते जांगे।
कर्र कीन शुभ काज ध्यान तुनि करिबं जाते।।
गान गिश दिहि हिन भड़े, क्रेंग करन बिन्ना तजो।
साधु बतावें जुक्ति शुभ, ताते अब मन्तिन भजो।।

्त्रिकारा वाणी मुनकर नारह सन्तों की खोज में उनसे युक्ति पूछने वोणा लिये हुए चल पड़ने हैं ! ]

## [ पटालेप ] हिनीय-हब्य

ं स्थान—एक नहीं, नागदर्जी माधुओं के स्थान पर युक्ति पृद्धने सभी सम्तो के स्थानी पर भटक रहे हैं । ]

ं एक सन्त के यहा नाक्की पहुंचने हैं | सन्त जी—श्राद्धी, त्रक्षपैं है से कब्ट किया । नाक्क्

> हजमें पृद्धं सकि मुत, सृद्धित झान विरागः श्रीपाध कद्य बनाय दें, ताने जावें जागा।

र्सका सम्बद्धा व स—

ब्रह्मपुत्र देविषे तुम, सबक्ँ युक्ति बताय । प्रमु सन्मुख जोबित करो, हमते पृक्षा ब्याय ? कक्क रहिँ जाने हम सुरे, हो तुम ब्रान प्रबोन । सर्हाट रहे हम स्वयं ही, खोजो द्वार नबीन ॥ सुनते ही नारदकी चल देते हैं। दूसर सन्त का हुँ जते हैं। सन्त की उनका सत्कार करते हैं।]
(ज में दूहें भक्ति सुत, मृर्द्धित ज्ञान विगाग।
भौतिथ कह्यू बनाय दें, जाने जामें जाग।।

यह प्रस्थानत्रयों कही. संवें भय भाग जाय। जो हस जानें सो तुमनि, कांचे सकल उपाय। वजी सभी तीर्थी में चूसे कोई भी ज्ञान चैरान्य की नन्द्रा उपाय नहीं बता सका। तारद्वी निराश होकर सोचन

्रवतः ही )—श्रव में क्या करें ? तमवाणी ने ती कहा—सन्त ही तुम्हें सरता साधन बनायंगे। जिससे दान बेगाय सहित भक्ति का उद्धार होगा! सभी सन्तों के समीप ता गया। किसी ने भी सरता मुगम, सरस साधन नहीं बनाया। श्रव चल् उत्तराखण्ड की श्रोर वहाँ बदगीवन में बैठकर तपम्या कर्नगा। तपस्या से ऐसी कोई बात नहीं जो सिद्ध न हो सके। चल् उधर ही चल् ।

नारदर्श उत्तराखण्ड की सार दम दिथे ]

#### त्रप्य

तभवानी सुनि चले देश-ग्रापि सन्तिन खोजतः तोरथ तीरथ फिरे सरित, तत, रणवन पावनः॥ सबते पृष्ठे प्रस्त किन्दु उत्तर निर्दे पाये। धामत दुखिन खानि भये चरन तप वक्षी चाये॥



तहाँ सिलं सनकादि सुदि, समाचार पन परि कह्या। पर-परकारक प्रश्न सुनि, ब्रह्म सुननि दिय विक्रि गया॥



न'रच और मनकादि

> 4414-544 4

ं स्थान-बद्रीवन ]

्रिस्टरको वर्षादन में पहुंचकर सम्यापास की खोर जा रहे हैं। उन्हें पीट से (न.रट, नारट) ऐसा शब्द मुनायों देना हैं, पीट फिर पर रेखने हैं तो सन इ. सन्दर्भ, सन्दर्भार खोर मनातन पाई दिलायी देते हैं। नारद्जी उनको साष्टाक प्रणाम हैं। ]

भी सनारम-नार्ष् किथर जा रहे हो ? चारद्-स्वानन् श्रेयहीं वदगीयन में नप करने जाया था। सीनाप्यक्ष यहाँ जापके भी द्रीन हो गये।

सनातन—तुम कुझ चिन्तित से दिखायी देते हो ? नारद—हाँ, अगवन ! सुसे एक वड़ी सारी चिन्ता है। सनातर—बहाओं हो सही क्या चिन्ता है ?

नारक् -- श्रीष्टुन्दावन में मैंन भक्ति देवी को देखा वह से रही थी, उनके ज्ञान और वैराज्य दो पुत्र वृद्धे हो गये हैं। उनकी घुद्धावस्था दूर कैसे हो । श्राकारावाणों ने कहा सन्त ही सत्नाथन बनायेंगे। नो अनेक सन्तों के सनीप गया। किसी ने भी उनके उद्धार का सार्य नहीं वनाया। यही मुक्ते चिन्ना है, उनका उद्धार केसे हो।

#### दोहा

and the second of the second o

प्रकार के प्रकार के जान कार हो के अवस्थित की गालिया कुरण जिल्हा है। यह मुख्य के कुछ उदस्य स्था हो होते की जानक कर समझ का रही है।

भारत । स्मारकी विकास का प्रकार स्थापन के कुमार के तर नहार काम का नहारीह नहता की होना है एक स्थाप कर का का कारत हों। साम का ना से ने दें। देंगा की उस उन्हें हैं है कर का कारतार । हो का कारी है, हूं है के



सन्तिम - देखो, एक सीमायह महेना मनता स विग न्याय होना है। यहाँ सीमा से यहे आहेंगा समता से गोहन पायेचिक दिन के लिये किया हुआ कार्य हा प्रमार्थ है। होता स्थान्यार्थ है। विस्तृत प्रमां प्रमार्थ है।

सार महोशा, बारहा जान, केराव तथा भौक का सहद दिस स्थाय से दुर हा, क्षण कर कोई सुगर-सा सायन कराइये

स्वतानम् चनार्थे तस्य तुम्न जानते हो है सम्बद्धान्ते तो सनो जानता ।

समातम—प्रवहा ! हमने विहाली-नारदलो-सं तुरस नाधन कता वृद्धा था ? श्रीर विषयण वैठे क्यासजी को प्रावन केया क्यांका हिया था ?

नारद्र—मेने पिताजों से सागदन यस पूछे थे, उन्होंने शुर्के सक्ष्य में भागवन बनायों थे, उसी सागवन को निपद यभाने की व्यास से मैने कहा था।

चतकाति—यस, वही भागवन समस्त गानितक रोगों को एकमात्र श्रीपति हैं।

#### इत्पय

ननकारिक तुनि कहें—न्यस्थ नास्त्रं पदस्त्रां। साचन शति सुन्य साध्य श्रवन कि स्विनिस्ताकां।। एश्र जानवत कथा सुगम पथ ऋषि-तुनि सेवे। श्रम्य सकतः श्रम साध्य अन्तमें स्वर्गाह देवें॥ सुन्त सागवन मिक्त हुन्दः सुन्ति सङ्घ नानि जायेगे। पाने शर्ना परम पदः सब अस असि हरपार्थमे॥ नारद्—ता प्रमा ! अब अन्य किसे इड्ने जाड़ें। आप ही हमारं अथड़ हैं। आप ही सुके भागवन मुना हैं जिससे भक्ति भ्रान वैशाया तीनों का कल्याण ही जार।



न्यद्वी की मनकाति से कथा बहुने को सर्वना सारम्कुमार—डब तुम इसना प्रशेषकार कर गहे हो ' तो हस भी उनमें सहायक वर्तेने । खाप विसी एक्स-तट के परम युग्य स्थल में भागवत समाह यका की तैशारों करें ।

तारम्-भगवन ! छाप हो किसी परम पावन पुण्यपद पुण्य रुथल को दनावें।

सनकारि—हिरदार के कुह नीचे अनन्द्रस्ट (शुक्रवातः) है। भगवती भागीरवीं के तट पर वह परम पुरुषप्रद नीर्थ है। बही तुन्हें भागवन समाह तुनावेते कानारनर में बही मुकतेवज्ञे भी राजा परीकिन को भागवन समाह सुनावेंगे। इस आप सर वहीं वहीं।

#### **家門**程

वै नगर मन मुनि क्यों—सतात हुनावें।
होह करों शुभ यह पुण्यात प्रमा जनायें।
हित बोले—हों. चड़ां. क्याकी करें। वर्णणें।
हिवहार हिया गहनात 'धानैह' भारों।।
नव कार्य सानस्वतात भना सीर भारों भहें।
जाति, गुनि, केला सिक्सुत, शररा सक्विक् सुनि दहें।
नव गिरुकर महातर अन्तर तीये हो होने हें।

# [ 1381 ]

#### [ स्थान-त्रानन्दतर-गङ्गा किनारे ]

[ ग्रहातट पर एक विशास बट युद्ध के नीचे उन्च भिशासन पर सनक, सन्दर्भ, संनम्ह्यार और सनावत बारों भाई (बराज-मान हैं, नारवती ने विधिनित् उनकी पूजा की नब चारों भाई पानो-पारी से क्या कहने सभी।

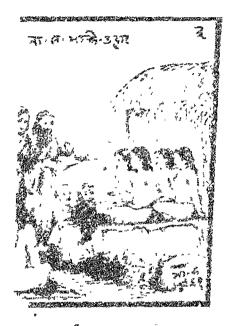
सन्ध-श्रीमद्भागवन सकत श्रीक सन्तापी की हरण करने बालों हैं।

सनन्दन-सागवत कथा जो प्रेम पूर्वक अवल करेंगे। उन्हें इस जोक में संसारी सुख और परहोक में दिन्य-सुखों की शामि होगी।

सन्तक्तार-को विवि पूर्वक शीमद्भागवत का अवण, मनत,

( 88 )

करेंगे । उसकी निश्चय ही श्रीहरण विन्तुं में हुड़ श्रीति उत्पन्न होगी।



न्द्र दारा भन्ति घर द्रवर । जगानन को नित्य सुक्त हुनुहु तथा बह भी प्रेस से अवज करेंगे। तसका प्रदेश, समन ध्यासक करेंगे। उनके समन्त गानक कर में क्योंकि श्रीजब्धागवत में श्रीकृष्ण स्वयं ग्रा सर्वेदा विरावसात रहते हैं—

#### र गाप

रे हुट्य भागवत सागर सही। जुसमाह सुकद सावन बर नाही।



मा आगवत-कत्न उर्ध्य प्रशाद प्रभु है(यै) हार्थ माना लीग कथा वितु रूप सब कीवें।। पढ़ी प्रत्ने सुनह निन, पड़ि मुनिकें पुनि-पुनि सुनों। जीवनवें मान जलव करि, एक बार नमा सुनो।।

ितारक्षी के समाह के समाह हीने पर स्वयं साजान श्रं भगवाम इकट हो गरें । उतने में हो डान वैराग्य युवावस्था सम्पष्ट रोकन भांत्र सहित कथा स्थल पर पणारे । भक्ति महारानी इत अना इकट करते हुए प्रांते हाथ उठाकर सुत्य करने लगीं । आह नगार भी नाचने चरों । उसी समय देनगण तथा पुराने भत्त्वसुन



[ महा सकीर्तन मे अलवान का प्रकट होता ]

भी दिन्य देश धारण करके का गर्व कीर संकीतन में समिमतिन हो गरे। उस महासंकीतन सम्मेलन में श्रीशुकदेवजी भी पधारे। भगवान मुग्लोमनोहर एक उच्च सिंहासन पर विराजनान हैं के चारी खंद सुम-म्मका 'शिक्ष्या नीतित हो हुता। स्थ लाग्यण यासुदेव' इस सदामन्त्र वा सन कीनंग कर रहे इस महासंकीन में भक्ति, जान चीर वैगाग्य सुग्य कर रहे थे। महाकृती—काम दे रहे थे। सारह्जी—ध्यानी बोगा की तान केंद्र रहे थे। देवराज इन्द्र—मृद्द्र बजा गई थे।

श्रीशुक्तदेवली—हाथी की उठाकर आद प्रदर्णन कर रहे थे। इत्रवर्णी—मञ्जार कता रहे थे।

इस प्रकार भगवान के चारों क्षेत्र नाक-नावकर सब ताल. ृ लय के साथ संकीतंत्र में विकार हो गई थे। वर्ष देर तक मैसीन दोना रहा। जब नव ननमय हो गये। कीतन करते-करते उ-पोट होकर जिर पड़े तब भगवान, ने मैच गरभार वालों में

भगवान—सक्तें। में वरदान देता हूं! जो स्विधि सागवत समाह सुनेंगे और तत्मय होदर कीर्तत दोंगे, वर्डा मै अवश्य ही समुपस्थित रहेगा.

समन्त मक्त-साधु ' साधु ! धन्य ! धन्य मगवान वंशीधर की जय, के बोष करने तमी। सारह कदने की कुनार्ध समम्बद्द देन के आवेश में आकर तीदने-पंटने हमें।

इप्पर

٠ ١

सबने शुक मुख मुनी नागवत सहिया नारी !
वित पद्धव प्रहाद सहित प्रकटे गिरियांगे !!
है हरपित हरि मक्त करें कीर्तन प्रभु आगे !
मिक जान वेराग्य प्रेमर्ते नायन लागे !!
देई ताल प्रमणावृजी, न्युरद ग्रीन वजाई वर !
इन्ड सुन्झ बजाई शुक, माल जतांह रहाइ कर !!

### 1 20 ) 1 : 1

हें इंट कांक्य इसाय शहरें इर-पर क्रियें। सब रहार में गंध चहें तिकि हिस्के बूसे। पंतर मां नारे कहें—तित्र वर अस हम जासे। भरा परे—मांच हों है कहें-नहीं प्रस् आहें।



्री पुर जनमाद के पासुन सारावन महिमा कह रहे हैं। एनमानु कोन् होंगे साथ, सुनि इच्छा पूरन सह। राथे रक्षा होंचे लोक सह, कथा समायत है राहे॥

[ पडावेग ] इति द्वितीय-अङ्क

## 777-33

#### एक्स सम्ब

#### THE REPORT AT

्रिक प्रेर का तक त्यास तथा वका भी विश्लेष स्ववं है। उसके रिका का वेप कमले कहापता कामप्र पुरुष प्रश्न विश्लेष में रिक्त सम्पर्णत सुग्र कीय गते हैं। इस में सी मी राग पर करें रिकाम करते समाध्यक प्रतिनिध् चता पहुंच माने दें। भीन मिलीय में से सहाचाक उस तालाव है से सहाते हैं।

प्रशिचित् - अरे सेन्द्र त्या कें न है । इस होता की और देख को विश्वन। के नवीं साथ बहा है ।

> ् ृबंह भनवण दुग्न भी उत्तर नवी हैने.

त्रव शक्ता देता से पहले हैं—युम कीस हो े नुस्ते पर उस्यु-श्रमी क्यों कार गहा है ?

दुपम—राजन ै फीन (जलको घलेश रेना दे, समी अपने करोरै का फल भेग रहे हैं।

राजा-प्रतीत होशा है तुम भ्रमें हैं। एमें के जिना एंसी सुन्दर बात कीन कह सकता है। तुम्हारे कीन पेर फिसने सोड किये !

ष्ट्रपथ-राजन ! तक समयन्तुतार हो होता है .

राजा-को अब समभा तुम्बारे सत्यकृत हैं तर दिवता, द्या और सन्त्र के बार पैर थे : अध्ये, गंगे और आस्ति के कारण तीनों युगों से तुस्यारे तीन पैर नष्ट हो त्ये । अब मत्त्र के महारे ही तुम पड़े हो । यह स्रन्त्यल कृतियुग है, में अभी इसका वय करता हूँ।



## 1 40 )

इत् कंदा इज्य देसमें इत्वत स्में। स्य नन्त्र है एवं वहीं दिशि हरेके वृसे। बेलेट सुन हॉर कहीं—सेड वर अब हम जासें। या परे—समाह होति जहीं-नहीं प्रमुखायें॥



े भी गुर सनकाति के सम्मृत भागवत महिमा कह रहे हैं है एकमस्तु कवि होरे समे. सुनि इनका पृश्व सई। एवं यथा कवि कोक सब, कथा समापन है गई।

> [ पराक्षेप ] इति हितीय-अङ्ग

## तृतीय-अङ्क

#### प्रथम सुरुष

#### ि स्थान-लग्नानां नर

[ एक देर का एक यूपभ तथा एक गी टोनों सह है। उन्हें राजा का देप दकाये कान्यज कान्याधून्य गीत रहा है। गी हैन भयशीत हुए कोप रहे हैं। इसने से ही रथ पर चड़े बज्जय करने सराराज परोजित वहाँ पहुँच जाते हैं। मेय गोबोर चे कहाराज इस कान्यज से पृष्ठते हैं]

दरीजिय-अर्ग तीच ! त कीत है ? इन दोन में और डैल को निदेशना से क्यों सार रहा है ?

्वह अन्यक कुछ भी उत्तर नहीं देता ] नक राजा बेहा से यूझते दे—तुम कीन हो ी तुन्हें यह दस्यु-धर्मी क्यों मार रहा हैं ?

युपस-राजन् ! कौन किसकी क्लेश देता है. सभी अपने कर्मी का फल मीग रहे हैं।

राजा--प्रनीत होता है तुम धर्म दो। धर्म के मिना प्रेसी सुन्तर बात कीन कह सकता है। तुम्हारे तीन पैर किसने तोड़ दिये ?

हृप्य-राजन ! सन समयानुसार ही दाना है। राजा-को अद ससमा तुम्हार सस्यपुर में नन, भविष्टा,

-को अब समभा तुम्हार सरवयुत से तब सम्बद्धाः वया और सरय ये चार तेत के जनते एके बनेत आमस्ति के कारण तीनो हुए गे हुए हैं। नक्ट हो गये। अब सहय रे किए हा तुम्ह हुए यह अन्त्यज कित्युग हैं, हिस्सी हुए हैं।



कर्कर गुजा सन्ध संबर असम्ब का वयं करने नुगन्त राजा के पैरों में पह गया राजा ने खड्ग खीर -कारान पर चरिय शस्त्र नहीं चलाता। राजा कहने

न् कीर हैं ? . – से कतियुग हूँ । सेरा समय दें ।

-संरे राज्य सं त् अभी निकल जा। -राजन े अराका राज्य तो सर्वत्र है। मुक्ते भी कहीं

रहते का भारत है।" -तू नीच है, कतः १-चृत क्रीड़ा, २-मद्यगन स्थान र-हिंसा तथा ४-वंश्यागमन इन चार स्थानों में रह ' डेव ! ये चारों तो निकृष्ट स्थान हैं। कोई गाँचना

बच्छा-सा स्थान भी छोर हे हैं।

सोचने लगे यह सुवर्ण (धन) इत्या की जड़ हैं। इ अन के ही पीछे होते हैं, अतः इसे रहने को सुदर्ण

- जा पाँचवाँ स्थान तुफो सुवर्ण दिया। जहाँ धन हो

बहाँ भी तू रहना ।

क्रिक्रिते ही कलियुग सृक्षम रूप से राजा के सुवर्ण

#### 750 1 17

The water apply passion or fil ार विकास करित चारणी **केर**को कहा ही पर है **।।** व राष्ट्रकेट सके नाम भाग एककी अस्ता । भागीत क्रिकेन्द्रभक्त दोलको सीमी बीन्ही ।।

Carlotte Comment

सुन्दी नवर्ष मुश्त करि भया, अन्त यसका है हैसि गण । न्यम मुकुट सुर्य सिर्दास्त्र, मुगोन नाविस्तर वेश्य गर्यः ..

The second secon

#### ETT-FIU

े क्यान--- जन्म-, बाज, प्रशासन् कार्यन्त के त्यारे का वे हुए देव भर दिखार के साथे तीत्रते हैं, इसे के एक गार्व र साथ रख पीछे रह गार्थ सुक-रणाग के कुल्यन इन्द्रण के समाज सुन्ते के नम में कार्य यहाँ सुन्ति समा व से मग्न के गाला से ब्ह्राये की 1 में विक्लाये र ]

परी जिल्ला—सुनिवर रे में इस देत का राजा परी जिल्ला हूं । से सूख-प्यास से व्यधित हूं । सुन्ने त्याचे को कन्द सूख फला क्षेत्र पीने को पानी दी जिल्ला

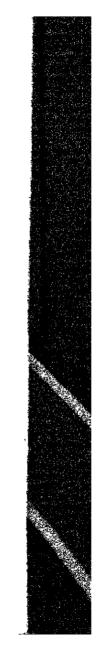
् ऋषि समाधि से थे तुष् होते ही तही

राजा ने पुनः कहा—सिन्दर ! सुनतं तथीं। ने कन से चिला रहा हूं।

् मुनि के फिर भी इझ न बोलने पर पास से पड़े मारे सपे सुनि के गति से डालकर राजा चले गये ; ]

ऋषि पुत्रों ने नदी तट पर बैठें शमीक पुत्र शहां से डाकर कहा—ऋषि पुत्र—कार शही ै तू यहाँ वैटा है, तेरे पिता के कण्ठ में तो सरा हुआ सर्प पहा है।

श्रद्धी—सेरे विना के कण्ठ से सनभ सर्ग फिस हुग्द ने डाल दिया



पुष्ण-वस्थितपुर हा सका उरोक्ति स्राय सुरक सर्प को सकुर हो होता के उठ वसी में इस इस वक्षा एवं !

वरोक्टिन्सनीक मृति

सुरका स्वीत पुत्र की श्रास्त्र कीय का गय हाथ में जल लेकर उसने शाम दिया—ारि कर्फ में भृतक सपे की डाला है, उसे वही क ति दिन में काट ले इसी से उसकी मृत्यु ही गोने-शेने पिता के समीन पहुँचा। उसी समय युनने का समय का गया। सम्मुख रोते हुए रामोक-न्यन े तुम के क्यों नहें हो। रे शक्को-पिनालों आपक करत में यह करा पहा है। सिनक सर्व की देखकर मुच्च ने पन दूर फैस्ट हुए एखा है। समीक-क्षा स्वास्त्र मने मेरे चारत में किसने अस

श्रंगी—वितास हिन्तनापुर का राजा वर्गान्त जाला था। बतो सून नार्य काण्ये समझ में क्षा पर यता समा

्रेस्क्रम् कार्यः । गर्भायः सम्बद्धाः जान्वेद्यः वर्गामम् विरे स्राप्तस्य वर नविर्वेदः

सर्के भावी सहाराष्ट्र । यह कावा था ,

म् श्रीक--- पुंडांस प्रमासन्य स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

प्रक्री—विनाती । सैने उप अध्या का मिल स्वागत विशा कि वह जनसंभव नर्श भूजना ।

श्रमोक - (तंत्रत के माध्र) तुमने ऐसा स्थापत वया दिया है पूर्या -- मैने उसे कीशिकों नदी का जल हाथ में केशर यही शाम दिया कि काल के सानमें दिर यही समे तुमी तक्क दनकर कादेगा, जिससे नेशी मृत्यु हो जानगी :

(कोधित होकर) राग्रीक—अर्ग, वर्च . तैंने यह बड़ा लड़क-पन किया . अला एक उनोत्मा राजा की छोटो-मी बात पर इतना बोर शाप ! तेरो बुद्धि अट हो गयो हैं।

हुनी-दिताजी ! समाधिस्य मुनि के कण्ट में इतक सप डालना यहाँ धर्मात्मापन है ?

एसीक-कसी स्बच्या है। बुदि सा उच्या है। अर्र, राजा

भूष प्यान से ब्याकृत था। इसने वरीचा पेसा किया दोगा, उस पर तुभी पेसा दोर इ देना था।"

्रि-विकार : स्वक सर्व एताना क्या सावार राज्ञ है :



#### 14 CT-77.79

गंदकर ) श्रङ्कां, वसवाह जल कर । आरे. एम ते हैं, बाबाग का चमा हो भूपण हैं । चमा है ही हम संलार पुत्रय वर्त हैं । कोई हम में चार दाजता है कोई मुसक सर्व हर दें हो अपदर हैं। स्कोर-स्वातं । स्पायं का कामान प्रश्व है। - विमहत्तर १ २३की विम्ता प्रश्व स्वयं । हेने प्रहा सार्ग न्यकान रचना है

> ः हेन्द्र स्टब्स् - [ प्रस्क्ष्म ]

> > 河州的一部双

ान —हारतन्त्रापुर के घटाराज एर्ट्यक्तन् का राजसङ्ख्यः नैवन्य सीट्रे बेर्ट्यन्या सामग्रीहरू

कार दुक्यानाथ प्रके सकता जाता, विश्व मुर साहत हारे हो। बाम खाज पूर्वाक बनियं, बिन्नु जाता सिर नारे। धर्म नहीं तैरायी सहयों. इस क्षिण संग निवादे हिंदा। याद्य समर कबहु निंद जाता, परि विश्वाद स्वेदारे। आवन विज्ञाती प्रक्ष धनकार, भोत्तित हों हारों है। साम प्रिता खान व्याद खालित, धनि पाण है तारे हिंदा। रोज प्रतिका खान व्याद खालित, धनि पाण है तारे हिंदा। रोज प्रतिका खान व्याद खालित, धनि पाण है तारे हिंदा। रोज प्रतिका धन व्याद खालित, धनि पाण दे तारे हिंदा। राज परीक्ति—( स्थाद हो) नित्र खुलि आश्रम से बढ़ा हो। याभी किया। के मुद्दि हाराजि से काम थे। देने कार्य इनके हाठ से सुप सर्व को छात्र दिया। इस दाप ले स जान नेरी केची दुर्वशा होता। उसी हार अने ने छा। छर जय-जयकार किया।

हार साम - जर्हहात के जीवन को जय-जयकार हो। सन्दर्भ को जीव- नहीं जाएकात कथा सकत्वार है। हाकारक - यह बाद ! सहाति राक्षिक के का राम से एक जसकारी कारों है। के सदार क किये नहींरे का कोई सन्दर्भ

err t

्र्संच्या का वर्षे वर्णाचन् - उन्हें मुख्या आहर के सहित मेरे समाव का को ।"

> ो अपने प्रह्मिक समाधार जाता है। मुख्य हो देन के सहाँग के चित्र का भाव क्षाना है। ।

यसीत है। ध्यानसङ्घात की तथ की । पक्षीहतुन चित्रवर के चयभी में सेश प्रणाम स्वीकार ही । समीक निष्य-संगत्त की नंगार की ।

सहाराज—अगवान श्रमोक सहार्थ के तर किये करा कर्नुश केया है. मैं की दसका बार अपराधी हैं।

शिष्य - राजर ! जेरे गुरुदेव ने तो कापके अपराध को अपराध दी नहीं साला ! उनको तो आप पर सहती द्वारा है

परोतिन्-परेन्तु क्या ? एसं भो निःसंकोच कहिये !"

गुरदेव के पुत्र खंगा से आपको शाप दिसा है, कि सान दिन में दही सप तकक बनका आपको कांटगा। जिससे आपका पर-लोक प्रयोग होगा।

वरीचिन-त्रमः हनता है।

शिष्य-मेर्न गुक्रदेव ने चाद्या का है छाप सात दिन में छपती मेरन के निधे अयस की विशे।



विविध-मान्ति को भी तथार असत्य दृष्ट है गाय-नो से खान ना मासना है। विविध-मार्थी मान पराध विद्यालय पुत्र के बार्गा से संग नाम मिर्चनन अस तो तथात । विद्यालयनुन कामझा, ने बान से नाना है। बुन्दान प्राप्त का गार्थ है। या नाना है।

#### 型机和

स्वतं रेगान का स्टब्स्य स्वान ना प्रवासे आके। भूग निर्देश राजनीत जिल्ली सकत जनके। राजन किले सुन भाग स्वे जो स्वान जुने को ने सान दिवसरे देखा स्वान के या का को है। सुनी शायको दान रूप को ग्राहती स्वागत जन। हाला जरहाँ विन है को संगतन मुद्धि स्वान

> ् प्राप्तेतः ] चतुर्व-स्थयः

िन्यान-प्रतापट मुक्ताल ] [ महावाड वर्गतिल कारते पृत्र हो शाला दमानर सर्वस्व एका कान्स्टर्ग्ड (गुडनाक) से शाला पंत्राको के किनाने वैटे दूर-दूर से ऋषि-सृति उनके सर्नाप का रहे हैं। ऋषि-सर्ग्येयों यह नहाराज वैटे हुए रोन्शेक्षर सा रहे हैं।

#### 看

महासुनि सम इद्घार वन वे ।; पानी पनित हस्सहोती ती, मोक्षे अब अपनावे ।(१)। ऋषि अपनान कर को अनि निहित शामिश्वत वनावे। इस्मय-इसस्स दोने नेया, प्रमुवर पार करावि॥२॥

में पुरसा विज्ञासक समाजिह चरक स्वित सार्थे। एक राम्पां की कृत होता. सीवें सीवा सिक्स्मी ।है। राष्ट्र कार्य कार्यात्रा, होतीहाँ हमा विस्स्ये । कर १४ व्याकं नामाः स्थितानं सम्माने । शा राग भूनपु होनाल निनदाश, ब्रेन्ड्बाह कहाने : र्ष कर केल को सावस में। संसी साथ कराये ॥१॥

M. II.

शहरण किर गाह स्थान बोले की प्रवर्त । भागों न्यारा को विश्वसात वस तब है। ने का है के नापु स्विन्त्विन ननभागे। हरमून वृद्धे नार्शीव विपति चित्ता सस दारी । र्शेर क्रिके करि वर्ते सत्त, पुन करत्वय बनाह है। त्रण मंत्र भए मिलाड है, शुरुण कथा मुनवाह है। ? }

रण द्वान संबंध नहास्त्व दे पार नहां है। क्षा चरनमें चित्र सुरी मी रीत बतामें। ंत्रः, कायन, शास्त्र समिति है न्याने स्थाने । को जिनम् अनुकूष पर ने निमम् पारि। नरत हेरम, मुन्त्र भरस, मिल्ल सब मुद्ध साधन कहें। तिने बोलयुरा सर-सावि लेदिः भोकि सुक्ति होत्र सहै।। एक कार्य-कार्य नपन्याः । वर्षान् समय महि 李初二明 新门 पशास्त्रिम् नाथन नाहि : सीव अन्य-सम्ब तया ।

シャーコール・ストール アンドン・スティン・スティー 大変が行っていたしゃ なが 大手 可倫理学者 手



प्रवेशियम् ज्योतस्य स्थानः स्थानः । प्रवेशियम् स्थानः स्थानः प्रवेशियम् स्थानः स्थानः प्रवेशियम् स्थानः स्थानः । प्रवेशियम् स्थानः स्थानः ।

्रिस प्रकार कार्यान्तर हो उहे हे नभी भगावृति कुरिहेन्सी हरा एशारी है। वे दिशास्त्रर थे, उत्सा सम्पर्ध सारंग पृति हम-दिन था। सुनार सुर्गात्तर हार्याः। यात जिल्ला, सुर्य से सममीहन के सपूर पर्यो का आग प्रकार के ये विस्त विभी से एई उद्या-पत पर खावन है। तम सर्थ से एउटन प्रकार क्रिक्तन्त्र किंद्रा स्वाराह प्रशिच्त है उत्तरी पृत्रा की सार्थांत प्रमुख करके पत्री भी

पर्वतिन्-प्रके ! हार है धनार्थ हो गया । हम जकहोही पर भाषने अनुस्य अनुस्य हो । अगद्य ! में दिय शाय से शावित है, मेरे जीवत के मान ही दिन गेय रह गये है. सुना पर हरा की जिसे । मुने मृत्ति का साग दिखाहंगे ।

श्रीपुक-गालन : सात दिन तो यहत है : महागाल खट्बांग तो एक सुहते में ही सुक्त है। सन् थे।

पर्गितिग-सगवन ! जिसकी बृत्यु निकट हो, रसं क्या करना बाहिये ? भंगक् - एसम १ कर्यात्म स्वना केले चाहिये इसी की निका हेनी है। तहुरय क्राण नामी भा काहियेश साप भर की कालु की मना नराज गरें, ने उसका उद्घार नी कारा है।

र्नेश्यानाम निर्देश हिम जर्गा मृत्यु व कशहूँ विखार । इति हे होस भूके नहीं, सिश्चेश किंग हड़ार ॥ प्रशेषिक्-भूष्णक्रम इपा है !

अंगाज -- प्रावन अन्दार्ज वाश ही अगवत है, सर्थन विति यूनने में अंग उत्पन्न हंगी है। अक्ति ही समस्त शोक शंत कार सम्बद्ध को सेटने शही है। सान दिन में भागवत मुन्या में तुम्हार उद्धार का दूंगा। राजन के नुम थोक सोत तथा विन्ना का सर्वथा परिच्या करती।

#### इत्य

्वको ! परम पुरुषार्थ छवा करे सोहि वतावे । सरमशीत कम त्यहिँ दुरत ताकुँ समुक्तवे ॥ ) स्तृंत सुधासम हैंन नीर तदनतिसहँ कार्यो । बोले सुम—नृद धन्य ! तगततें दित त्यायो ॥ सूधवर ! सब जिन्ना तदह, सन-सोहतमें सन धरहु । कर्टूं भागवत नक्त अब, इस विन हुकें सुनहु ॥

[ र्रापुक्तेवजो राजा परिचित् को स्था सुनाने हैं। सुनकर राजा का शोध गोड सब रण्ट हो जाता। तब गुक्क्वेवजी पूक्के हैं.] शोहफ--

#### S.CON

कात्म चिन्तवा करो अहं सत चित कहता अँ। परत चाम हीं हका परमपद बक्का कहा अँ॥



परना गांधे उन्हों काण्यान् पुन हेन्। का समा समा है। एका भाषा के के के कि का मान्यान सुमान सुमान सुमान सुमान सुमान सुमान सुमान का निवादान का समा सिवादान का सामा सिवादान का सामा सिवादान का सिवादान का

|य-नगरुष निस्त १६। प्रचरित आति सप्तय लागी ।

दवर पृष्टीन गरि पार्टा के सम सर्पेत ।

पार्ट गर्म निर्मात स्थेर ही देन क्यांग्य ।

स्यो द्र कराज पर्टा कर्म स्थान स्थाप ।

स्यो द्र कराज पर्टा कर्म स्थान स्थाप ।

स्यो द्री त्राकिति कर्म स्थाप प्रमान स्थार ।

स्यो सुक क्यांग स्थाप निर्मा स्थाप स्थाप ।

स्यो सुक क्यांग स्थाप निर्मा स्थाप स्थाप निर्मा ।

स्यो सुक क्यांग स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ।

स्यो सुक क्यांग स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ।

स्यो सुक क्यांग स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ।

स्यो सुक स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ।

स्थान स्थाप ।

स्यो स्थाप स्थाप

सारावत स्य शास्त्रिकी सार ।

कृति काणवारी गणन राये पहि, होते तिसि उद्धान । १२३३

गन्नित्ते पंग गुने गणन चिन, रसे स्टब्स न्यनाय ।

कृति सम्ब अग्रावत्य गुरुक्तिके सन्ता वृद्ध स्त्रास । १३३३

कृता स्रोतन अन्ता स्रप्तमें, स्ति जुद्ध स्त्राचार ।

वगः ध्रम गणि क्रे करम स्त्रा, सह स्ताचार निहार । १३५१

साम विभाग स्तित्तस पंचे, प्रमुक्तिन स्ताचार ।

वाचि गार्थ सद्द की निन. हा । हा । नन्दुसार । १४३३

वाचि गार्थ सद्द स्ताच पर स्तर्दन, सुन्दाविषिन विहार ।

हा निद्दान्त् मन पर स्तर्दन, सुन्दाविषिन विहार ।

हा निद्दान्त् मन पर स्तर्दन, सुन्दाविषिन विहार ।

हा निद्दान्त्व मन पर स्तर्दन, सुन्दाविषिन विहार ।

इति नृतीय-अङ्क समाप्त

## 771-37

#### 377 - 273

्रिश्य-नृत्यहः उट सा ग्रह याम् ] [ अरमहेद अञ्चल शयमो क्यमा कृतमा क्षीर साम्बे वर्ता पासी उन्धती के सन्द्र देश कार्ने कर रहा है। र

अभ्यत्य- मेरे मारु विचा भी है, बन भी है, वैभव भी है, फिर क्षां की हार्जा नहीं।

दापुरी-सुद्दे किस कर या हु:ख है है

कारतकेत्र-- तस एवस्य के वह में सिलकारियाँ मारते हुए खेलते-हर्न पुत-पुत्रों न हों, वह घर तो तरक के सहम हैं।

भुन्यूनी-- तड्का-नड्की से किसने सुख्याण है। उनके पीछे मदः इ.स्ट ही प्रकात पडरों है, गात्रि-हिन प्रार्टी की विन्ता युना रहनी हैं।

शास्त्रदेव—तुन केला वाने करनी हो। गृहस्थ का सुख तो संतानी

भुन्धुनी ( सुँह स्टकाकर ) होगा हुख । मैं तें। सन्तान वालीं की नना दुखी चिन्तित दी देखती हूँ । फिर जब भाग्य में सन्वान है हो नहीं, ते इसके जिये दुःख करने की क्या यान हं ?

ष्ट्रात्मदेव-- तो सममती नहीं। दुरुवार्थ तो करना ही चाहिये। सन्त महात्मा रेख पर भी मेख बार सकते हैं। बहा-उरवाँ के अश्रीवीद से असम्भव भी सम्भव बन आवा है।

भारतुर्न्ही — मुख्ये आएको ५० जिल्लाम होता । सुर्वे में) यह यह विस्थान हाले

क्यान्यहेड्-स् क्याहर्क में है तमें तो से बच जा उन है बुक्दर्क-स्टिंग प्रोति

कारमें हैंच--विकार स्वाप्ता की स्वेष्त्र में का कर हैं, की की सुर्व की दूर कर अर्थ ।

भूम बुली--साथ मारास्या मी ब्राह्मिकी है। ब्राय पर मबर्च जी नाले-नाले की भीत्व भागाने जिल्ला है है बुलारी का दुला केले सुब कार सुक्षी है

कारकहेत....मू सदद को में है जर्न पुष्पचे दाने करना नगर्द है. कारका, में का शा है

िमा करका आसम्बन कारण वे चीत चम देश हैं।

चल दे-चलते वृत्र में उसे बहा त्यान नहीं एक सरीक्षण के मर्बोध
बाका एसने तोय देत जेकर ग्यांच करणम लिया। किनावे पर
हो दुल्लिन सनस बैटा गा। अब कार्य के परचान एक ते कर्मी
सन्यासी वर्श कार्य। उन्होंने भा नाथ देर अंकर जनभान दिया।
उस समय आ-वर्गण न जाकर बैटा गा। के सक्तर आर्मा बोद दिया।
प्राम विद्या। संस्थाना न मान्स से नदनर आर्मा बोद दिया।
सन्यासी—महामादेव किया में स्वा रहे हैं।?

चारमहेब--भण्वस ंतुरासदा हा तर पर यक बस्पूर शास है। वर्ता के रदवा हूं।

सन्यक्ती—प्रतीत होता है, तुम्हें के है सको हुत्य है इसो से तुष्कार सुख सक्तत पर उत्तरिदार्था है। नेत्रों से स्रमुखर हुए हैं।

कारमदेव—मनेवन ! मुके बड़ा भारी दृश्य है।" सन्वासी—वहाँ सरोवर के समीप दो मेरी कृष्टिश है वहीं वर्ता ! यहीं कवने दुशय ला कारण बनानः ! े होती अल्यू अल्यू क्षिया पर आने हैं। संस्थाने प्रश्ने जन्मन दर हेट गाने हैं। ताथ सोहे तुप आत्महेत कानमा के गीता कुछा सोदी तेन प्रश्ना ]

संस्थानी - १ ता हार्य कायने बुधन सा स्टाम बताओं । ८ में हुए का राजेब हान्या है -

प्रेणहें बर्ग एक है साम्बर्ग । तत्राम निना स्वनि हुम पार्थ । विम गामि पुरा करना एनुवा । तां में अवदी में घर बार्थ । ते हैं है दिन सम्बन्धि नग सुख योगी पास कामची है। विकाधिक शहम एम्सान बना विकास पूर्व हम्बासी है। पार बेसद सम्बन्ध विकाधिक तक निना पासे सुमदर लान नहीं। सर्थ सन वर् राग भुनदर जहाँ का करने दर बाल नहीं।।

## नंग्यानी हेमने हे । ] १ इवस्तर्वालः )

संस्थामी—
मू विश्व होकर सुखे पना सम्ति से मुख दिसने पाथा।
धूनागृह क्षेत्र क्षम चित्रकेषु, सुन कारण दुख सबने पाथा।
इस होड़ व्यानको कपनाल, हे शान्ति त्यागमें ही माई।
देनिके साथाले चक्करमें, नहिं शान्ति किसीने की पाई।।
इस तरामें को दुन पिनु साता, सपही न्यासके प्रानी हैं।
सप रोग नुने डाक्क हैं, ये दुसह दुःखकी कानी हैं।

श्रम मुन्दको बहुन न बहकातें, में नहीं सीख अपनार्ति। सन्तान सुने नहीं देवेंगे, तो तब हारे भर जाऊँगा। तुमको दिस इत्या दग दै। में लोग तुम्हें धिककारेंगे। हामको दिस सको सबहों सबहों सन, फिर तुमको सहा पुकारेंगे।। संन्यास गुष्कों कहा ध्या, घर-घरने दुकड़े खाते हैं। सम्मान कुछ वह गुही मना, जिसके पुरसे तर जाते हैं।

新红色过去

अन्यक्षित्र है। दशका नगर एक शेरत क्षेत्र है। इसका नाम जन्म उन्हें भीन एकको स्रार्ध श्राप्त हैचा को है। इसका नाम जन्म सम्बद्ध पर्दे हैं। एक स्वार्थ सम्बद्ध हैत समा किए हैस सुद्दे स्वकृत में होता है है। इसकार |



्राम्प्रदेश श्रीम स्वित्र

र्नी—सन्द्रा, तुस रहे नानते, नो इन फत को ते जाओ। अवनी दन्नी को दे देना । इसके खाने से निर्वाय ही सन्तरन दी जायती।

्रेकानमदेव फल लेवः ६ । संस्थाकोजी की साध्यांग प्रणास इसको स्थाज सकर धर के, एल देता है : ]

## ्रिक्षाय--स्टब्स

# े राज-इन्हें से एह ]

्रिक्ष्यूनः जोतः का व्यव्यक्तं वित्ते हैं। इसके राख्य प्रकारही विक्रा कार्या है। एक वहां में स्वता के स्वयम्ति हैं। है

पर्ने मिर्टम-पान शुक्युकी है शतल प्रमाने बर्ट सिवार भी समले की भाग नर्न है। याँच मेर काल स्वार है है।

भूतपूर्वी---तुमने रिहासर उसरत में आसी दिया ही सही । में तार-गत सही दें मुकती ।

(जीवन के एए) वर्षीन्ति—धिन है हैं। सुन्हाम विद्युत्ता भी में चुता हुको। आज अब के दिना मेरे एन्से नुषे कह जारीते। कल भी उन्हें आने की कुछ नहीं मिना था।

( मोह यह के । घुन्तुनों — मुखे रह लायेंगे तो रह लायें हमारी वता स । मुन्दाने बनकों का हचने कोई देश से रखा है करा े जब संगी तब अब देशे। अस देशे। हमने कहा स्वापने खोल एका है करा े तुस्हारा खसम हहा-बहा केल नहा है। तससे कास कराती नहीं। यहाँ संगने का जानो है। चलों का ! हमारे वहाँ अक-फब्र नहीं है।

[ गर्डतंन्त्व सुरमाग रोता हुई खड़ा रहती है। दस उसे बॉटतो हुई पुत्मृती कोथ में सर कर यहनी है। ]

पुरस्ता-स्मिरं एक बार कह हिया। मैं अन्न नहीं हुँगी, नहीं दुँगों तु जानी करों नहीं है है सुविद्धी कहीं की यक्ता देकर निकाल हुँगी।

ं हो सिन ने में क्रोध अ गया वह गरज़कर बोली ]



वर्णिस्ति—वर्षं ध्या सर्को वसा है, ने आ है व प्रेडे भीष स्थानस्था पराका वैसाधिर प्रेट है कुछ प्रदार काके बरा दार एक नर काले । प्रा प्रस्त कारा दा स्वास दिशना है ।

पुन्तपुन्तर र पाची नोजार जारी की किता-प्रशासन प्राप्य के अवस्त

तुन्युको -- का तर् सुनसी सदी से कि का मुझे के का भी कहीं शाला । कि प्रश्नेता जनमा कर महिले करा था है सिमोहत क्रेमिश प्रती की । और के भूतर देखी राख कहा की सुर से में की राजियाता क्रा । साक्षेत्रकी की !

यहँभिक्ति—स्वाद्यान है लीभ सम्हास कर दोक, बार गिए ही स्पेरी है, इसमें सार्थ में बाहर के स्था है। नेनो केंग्से बुलका की में बिराझ किस्प भी हा

ृष्टुम्युनी मार्गने शंक्तों है पर भा गाएने की उधान ही अन्ति है। इसमें के की अगमने प्रश्निकी है जो स्थान की कैया कर पड़ी मिनि प्रा उक्षका भाग कार्ना है। प्राप्टुना गानो देनी की उड़की है।

पुनपुन्निम्म्याचार्यवर्ग काही को । क्षिणार इध्यय-इदार सुद्ध करानी रिप्तरनी हैं। चार्य हे चहने। से एयका सुँग रजार दूर्णा। आहे हैं कालांज कांगले, तैसे एलके सन्दर्भ कोट यह दिल्लाण

कारमदेव—जानी सर्था एक स्वी है इतका सीध ठोक करी। 'परमुखी-नुष्के कुछ पना भी ते होईन काछ स्थाने श्रर-यात का काले हैं न देने पर सीव वहती है 'उनदा नोर कोववान का छाटे।'' आसिष्टें के न्यान्ती तो अब कुछ बहा नहीं स्वाता तभी आँगना ते। इत्या कर्त इस के ही की से लोग जाकर है उसे हैं, न्ये के पान कोड़े नहीं जाता। कल बासे उसी पर ने रामा जाते हैं। इस पोय सेर अस देवे से कुरहारा करा पर पर कारा !

(सरकार प्रमण्डले—तुम तो परीपकार करो। मैं तो पेसी लुलियतों की भय थान दा कण भरेस दूंगी।

सार प्रदेश---कारहाः, प्रवाहाः, सन देताः सेयो बान नी पुनी । हुनहारी---प्रधानण है ै से बात-तान क्षत्र भी नहीं सुननी । भारतकेत--नुष्हाम प्रकेतन की-स्वाध की-ही बान है। दुक्त प्र---व्यक्ता बनाकी वता वाल है।

ित्य विषय ने हुए दे हो। यह एक है। एक बहे आरी लिख बहारका ने दिया है। इसे तुम पवित्रता के साथ खा सोबी, सी जिन्ह्य हो मुख्यों जन्मार है। हायसी।

्यन्यंनतस्य नाय से पाए लेती हुई ) नुम्हें ने: उन सायुक्यों की नी पाने पर विश्वास है । अच्छा, लायों । नुस कहने ही सी या तर्ग ।

ें 'रुच लेक्न कीनर चली जाती है। चातकदंद भी आपने राग्य में जावर नित्य कुन्य करने लगते हैं। }

> िषदःशेषः ] नर्तस्य-दृश्यः

> > प्रमृजन

[ स्थल-एक निसान का पर ]

[ एक किमान का नाम व्यक्त, क्षां का नाम श्रद्धका । ] विक्त्य-मृत्नां है, काल बाहे का साम बनाया है ? ( सूँह विक्का का ) हा नुमन कहे साम लाकुर राख दिये हैं, भी व्यक्तक । भीत द्वारा रोको द्वारते ने स्वर्कात । है स्व स्वर्को, स्वर्ण करें काको स्वरण की सीच से ।

प्रमुच्च स्टाइ केट. केट. ह्याड स्टाइ<sup>न</sup>

बरो—में बुद्धर सहस्वह तर गी. पासी है संशासने के सेचे इतार स्थे

adrie fræd dat di kall j

母子子子子子子。

्रिक्च बंदो कायर इस केल देशा जिला दर कला तथा हा प्रमुख ताने पर सालों से पूरा निमालित को से उसके दोले-परस सुन से शाल-गोल पद्या उनावतों हे। स्थापन हुएका के लामा वास रामा, पन नित्र तीरस्या काना है, मो मेस्सार है यह सालों की साली-पीडो सुराम्य भारतों है। सुन-सुन वनने गोल-गोल पद स्वत रहे हैं, एका दो बेलकर स्थिम्य सुद्धा है। है विस्तृ—सारश्य पर पृष् केस सन गते हैं, स्थास बोर्ड स्थोदान

पस से क्या रे

िस्वाही वान बनाने में ती वही चतुर. जीत की चहीरों रम को सीरी, उनके में सीरी, महाचार में कोरी, पनि से निन कर कोरी, अतावदों में पर बर तीरा देंग्ली ] की—मी एफ बहा त्यीदार है जिस्सू—कीन-सा सीहार है ? मी-बाज सुद्द्यन चीथ है :

जिन्मू-तुइकन वैष्ट । यह त्योदार तो मैंन क्यो सुना नहीं । ज्यो-नहीं मुना हो अब नुन ला ।

विक्का - इमें स्पीतार में तीना नया ते ?

स्त्री-आत के विशे वीहा गोल पुत्री उत्ताहर कुष्या पर केंद्र जाने

है। ए शक्त पार ताने ही कहीं के खियाँ सानां हैं। की द्वार रह सने हैं, सन्हें हमा खाले हैं।

नेश----- तम् वम्हने हे हो नहि सीत्। उने क्रमण्य कानुहे सुक्रमा नहि । राज्यां न प्रवाद वने, तेल क्षण सहि। नार्य नगरे गरे स्. एक हो सर छोड़।

्रास्तरम् ते के का में प्रशासि पृष्टा द्वापन प्र फेलने प्र में गए वे. मान्य ते प्रस्त , समी कीच नित्र कार्येगे । स्वतः सुद्रेके गान्य हा पर में गहरा का स्वार्त । यह लोचकर यह द्वापन से मिन्द्रे नय सामा ते हैं

्यानिशिषहाई द्राप कर नुपन्त बाहर ताती है, लड़की याने में भार चान तमानों हे जौर बढ़-बड़ानों खाती है। ] लड़परी—उम गाय के पांच्यती उम विक्रुणे भी नहीं पड़ती। से पांचत द्रतिया हैने ही भी दर समय तैयार रहने हैं, यह पूर्व दताते में चेम्हदपर्या दर हैने हैं। सभी वेस में भाज कर देने हैं सभी तोज में चीय। स्थार्थ विधि बहाने ही नहीं।

तियान- थरों, ज्या हुआ ै क्या प्रिडनों की कीस रही हो। आहरों-पूछा करा पत्थर। यहाँ के प्रिडन भी पूरे सहक रागपा है। कल नक नो कह रहे थे खुइकन चौथ हैं, खुइकन चौथ है। अब बहते हैं, रह रह रॉमें है। रह रह पांचे हैं।

मंग्डन्—गह रह पांचे का क्या सहात्तम है ? अक्षंगे:—अव ये पण्डित ही जानें। कहते हैं—-

> पर्निक् उद्या बनें, फीने छुट्पर साहि । सिर्ग निर्म गो न्याई तर, रहें नुसाई खाई ॥

तर वर् पार्चक् पुनस्य प्रशास्त्र स्वानं स्वापः । सिनिक सार्था केल रहें, हास-पुष्ट ही सार्च ।

यह यह पानि के द्वार पर तुना नेक प्रांच है, जे क्या रह कार्क है क्ष्में किया कना है, लीन निष्ठ प्रांच है क्ष्में पुराव खान हैं।

Frage Street

これのよれないであるとないかがはないとないしている

सम्बंध। कान सम्बन्धः नाको खळ्या त्यान्। कान्या नीता त्रमें हे, युगा पादे तिकः। बाह्या महत्रमाकोत्या है, हर्गन को माति। सार्वसाकोत्यां का मुलस मी जार्ग

स्वार सुनेसन है। स्वार सुन्यम देख है से देश रह रह पार्च ते हैं । स्वार ना अंदिनाया श्रीत है। स्वार मुंदिन हमें हमें प्रस्तिती ते सहस्रा देश हो। इस ही दुस्का रोदे स्वार के साते हैं।

िवित्य नावा है। अदमेते प्रशासी की गह-मह स्व असी है।

# 

[ stidentials to the

े शिल्डमी को होयो महिन का नाती है। होनी रहिन किया हमन करके बाते करने सामने हैं हैं कोटो बहिन-दोदी काज बहे दशस नगरही हो रे स्या

गात है।

कुन्युकी—भाग है पाक्षर । तेरा जी हा भिर्मे ही राजा है । वह नापु महास्माओं के पीछ पड़ा रहना है । जाता कहीं से एक पता ने आगा है । बहना है - राने गा जी हो ने हरता करत न में नायमं। अला कन मान के यो कियों के प्रत्यान को स्थानों है।

रा पा रिक्षित-पुनर्ता रहेत हा स्था है जान गाँउ लोहें। सम्बाह रा पात ने सम्बाह है से हुई से हुताबा स्था

the state of the s

को र कर देव कर है जर है कर है कारों के उन्हें बहुए हैं पुरस्ता कर है जिस है है के खालाब में अकारण है उन्हें

व्या प्रत्या के देश पर सुन कावता ने अन्तरा है। एवं प्रत्य कारते किये के बाद होता । अंग्रह में कावता है। विया का प्रत्या किये का होता है। इसके कावी । एक प्रत्य कारते के कावती जनका नहां की हथा प्रश्ना के का ने के निक्ती जनका नहां की हथा प्रश्ना

करों हाकों हैं। करों हाकों हैं।

प्रति जाता है। वे पतार प्रकी जय होता है भरता पति हो जाता है। वेने सनेकों को बच्चा होते समय नीने विकान ने माले हैंने हुए देखा है। मुक्ति हो जाती है। के क्रावरत मुक्ताओं एमें कब्द को नहीं नाई सकतों। कि तो महीने का जुट यह जाया। माने में आह ना बोह न-गरी कों में नो आह भी नहीं सकतों। ेस ले राज पर का नरीत का है। यह तसन की का हुन सामका स्थान होंगे

्मिन्स् क्रिक्ट स्थानिक अस्तानिक अस्ति के प्राप्त कर्ति के प्राप्त कर्ति के प्राप्त कर्ति के स्थानिक क्रिक्ट के स्थानिक क्रिक क्रिक

विशिक्ष साम्बर्क कार्या के अवस्थाना साम्या है। स्वाप्त कार्या के स्वाप्त कार्या का

बुत्युक्ति-स्वयं वर्षानी वस शहरा व शहर् जीक-न्यवं के नहीं या कानवार नहां हुए तेया भूगमनी-नेषा का क्षा शास्त्र नेसे क्षा

णारस—कीपा से तक्षात्र कर सेका । उसे पाक स्याप्य को देसा, कुन्दुर्ती—नीकर

वर्गन-विश्व क्या जनका रोज प्रोतिका का या का राज्यां क्षेत्रे व्याप्य क्षिण की की प्राप्त मुक्तार्थ जान के के उनी पुत्र का नेका कि वनचा पृष्टा है। की प्रति का विक्रम् बच्च क्योंच्या कुला पंचेता

बुन्युकी—बहारी के जिन्हा संदेश है द्रार । या पान प्रका : परी : विन्यु इस प्रयास क्या कर्य !

बाहत-इसे ही को रिवल नेवा । यादा तो को बाह का वी परा चल अध्यक्ष कि सम्बंध में से सम्बंध नेता है :

उत्पृती—तृ होरी प्रदिस प्रकृष्ट पत्रहों है, मैंते मुक्ते जगान है। सागर से दबार लिया : अब से यही कर्लगी .

[ महिन बतो जानो है, कुछ मान से आ जानो है। उसके उसका होता है। भुक्षुची उसे आदश बनवा बरानो है। आउस-व के दार पर नौपान बनने नमनो ते, पहा गारी एक्ट होना



नर अध्यास सम्बर्ध बहुत सा हान धर्म अ नित्र त्यांचे तिन स्थाद एक को तिवादी करा केटा केटा १० इनमें हैं - में पुन्युकी को छेटे केट । इसम्बर्ध के में। अब बन्या कीत्म हैं। सबीय के केटा। सबम बनक दान की से सहस्र

# र्गाक्तर्-जन्म

देश उनका नाम गोहार्ण रहा देना है। दोनों बा म में डाते हैं।]

पढारुंक

#### तज्ञस-हरुव

े प्रशासिक के जिल्ला मिला है। अस्ति के जिल्ला के लिला है के लिला है के लिला के जिल्ला के जिल्ला के जिल्ला के ज के तर पर को अस लाको। याचा १८०० वर्षक । त्याक बाह्यको स्थानकोदाना ब्लीएको को स्थानक प्रस्ता के स्थान के लाको एको क्यानको सुद्धानी बाह्यको स्थान देखों हैं।

े क्यांच्या ( साम् की माझ हो छोत्र साम के र राम द्वार के रे हार्या क्यांचे मुख्ये हार्य राम हैं .

सारमा है। पुरस्नों केसी है। सम्पन्ने आने हैं है है। समन्दि हैं।

---तुस देशों की एक हो। यस देश कर दर दर का है।



्रापणं और सामादेव हैं सुने देंदे नहीं। (शिवा की भो भारता हैं। पिता सिर धुन-धुतकर रोते हैं। युन्धकारी कीस में भारकर बरोनी की प्रशास्त्र नका ज्यान हैं (पर्शा गोकर्ण आते हैं। पिता को रोते देखकर पूछते हैं। गोकर-पिनाडी देवा यन र आध क्यों में रहे हैं ? ( गेल-गोने ) चालमहेल-चेना दे क्या बनावें कुछुत्र में तो निम्मेनान होना हो सहा है।

होहा—चेत्र्यास्त्र असः सन्ततस्त, कहें वही स्वयवः । राक्षे सोधसः नगतः लगः, जाको युत्र छुतुत्र ।। एकः तुत्वी जाके कहो, कीन बतावे पन्यः। सूत गेप्यमं वस्ति कहा सुन अतिकानी सन्तः।।

तं कर्ण — हेहेडिशसंख ह्यांडिसिस्टि स्वक स्वयः हाथायुनांटपु सदः समतः व्यितुद्धः। ५२मनिनं सम्बद्धः कणसङ्गनिन्द्यः। देवस्यसम्बद्धाः स्वयः सन्तिनिष्टः।

### ( 0)

धर्म पनस्य संगतं त्यज लांकवसीतः, नेवस्य साधुपुनवाज्ञहि कामतृष्णास् । अन्यस्य दोएगुणविन्तनसामु सुन्दाः, सेव्यक्शरसम्बद्धाः निन्दां पित्र त्यम् ॥

## Arcis.

#### ( ? )

श्राहित्र मांसर्ते बनी रेहमें त्यामी सनता।
नुत तान तीन मीह करो सबईमें समता।
जिन मंगुर जम जानि विनामी सबई जानी।
नाशवान सब बस्तु जधारथ इति मत मानी।
श्रीहरी रस वैशाखमें, रिमक समा बाके बनी।
पक मत्य मर्वेश हैं. मिक बनहिंकी में सनी।

**d** 4

एक धर्म है जिहा सिक्त भरवनमें हारी। लोक धरमके त्यांति हायाभित्ते जिन भागे। स्वा साधुनि वर्गे हरी सन्तक स्वत दिन वित्रों तुरुणा काप सराको श्रीहरिके चिन। अन्य दोष सुन चिन कहीं-वाको प्रशुर्गमें प्रविधि। साधन मेका दायांति चिक्त साधका कार्यकर्षणा।

ग—मी विवाली काय काय का स्थानक पन में चने लाइके चहाँ श्रीमद्भागमत का निकास व्यक्त सम्बद्ध सबस सक्के सालक्षेत्र क्षीजिके।

हिन-वहम देशमें सुने बहुत मुन्दर अपहेश निया । अव में इस अवध्यात सुने एवं का स्वराजन श्रीकार चरणविष्टियों में दो चित्त को उत्पर्णण । [ आस्मदेव सर्वश्य प्यागहर तम में ताते हैं । ] | ( गोवर्ष भी संधियाता के सिये सम देते हैं )

हर्ग-इक्ट

[ स्थान—पुरमुकारी का बर ] ( नेपाय से मंगीन सुनायी पे रहा है। ) सन्तानन सुरक्ष स्थय सोवाफी ।

क्रोब, मड. लीभ, मोह्में फॅरगो चिन सरमादी। १४४ हेन इन-उन निन भटकत, करि श्रद्ध पाप कमापी। . चोरी: डागो, गनिया परधन चिन चनायी १२५ होगा सो नर तम पाने, बदमे कॉच विकाणी। र नम ये मोल श्रमोलश, करि कोला नमश्रमी। १३४ जगाराम कृष्य क्रां सक, सेवा सन न स्वाका ।

कुन्द्रम गाइ सक्सर शुक्त, नर्या कीर पित्रायो ।।।।

किरा दी ) रिना बले गांव । सना कर गई थाई
नीर्य देन गर्य । अब निरंगात दोड़ां। केरे, नस्तुत दुक्त
का नेत्र । अब निरंगात दोड़ां। केरे, नस्तुत दुक्त
का नेत्र । करों जाक ? तथा करों ? पर में क्रम नहीं
पान मन नहीं । काम हुछ है नहीं ! केरे निर्धात
होगा । सुपा दिसा कास नहीं चलना । कोई आच्छा
कास नहीं मित्रमा । कोई सीका भी निर्धात । काई आच्छा
कास नहीं मित्रमा । कोई सीका भी निर्धात । एका
में भी भव किरा जाता है, जुक्य भी स्वेत्रीय । एका
में भी भव किरा जाता है, जुक्य भी स्वेत्रीय । एका
में भी भव किरा काला है, जुक्य भी स्वेत्रीय । एका
कोरा काल से काही सम्बुद्ध करीया । (इस प्रकार नोपका
कोरो काले लगा । अन के साज्ञ से गाँच वेश्वाने भी
का गुवी । बेरगा अन के साज्ञ से गाँच वेश्वाने भी

वेरया—सुमको लिया फँसाय, धन पट गह्मा दीलिये। यागूँ आणि कगाय, बने निकटू ही रहा ॥ वेग्या—इय समझों तुस धनी हो, काई तुमरी खोग। न्म तो तुरुच-तार्फो, हामी होची चोग॥ वेग्या—विन वेसा कैसा सुग्य, वैसा से सुद्ध होय। पैसा यहि नहिं देखो, होइ जाउँमी तीय॥

'रया—निकर्मः चुपरो बात करि, कँसा लिया ई मोड। मेरे मन को नहिं करो, मारि भगाउँ तोइ॥

वेश्या—बद्धिः चिंद् काति ही प्रसंशाः, करी बनाई बान । नेरं मन को निर्द करों, सार्केगी वो लात॥ [ व्यान्तं को यात सुरातः पूर्णकारं न्वरंशत हुआ। आज वन तुका में सब प्रवर्णक वाया था , वेश्याने प्रयक्त ताता प्रकार नो सीरों कर रही थो । जनम सबके शांत हैन अव्योग करने हुए क्या-]

टुन्नुकाची--चुन सब तो संग्री श्रामित्य हो, जीवसाधार हो, के तुम्हामें जिसे जीता हूँ, इस में सभी की रामक कर दृशा । तुम्हामें सिसे सुन्दर-मुख्या यस बहुम्हर ज्यासुरान कींद्र नामा मकार की निस्मार्थ नाजमा । नम्र सो तुम जानक हो जाकोशी।

देश्यायें—हादर होते तय ही मी । धन्छी चान ह बाब नक और धर्मका करमी हैं ।

[ युन्धुकारो राजमहल के चोर्चा करते जाता है बहुम्बय वस्त कार्यका चार कर लाता है। देश्याची की परम प्रमुखित होका कार्य हार्यों से पतिसता है। उन्हें प्यार करता है। प्रसन्न होता है वेश्याणे एकान्त से जाकर सन्द्राण करती है।

यांहरी के प्रतिके के हैं। बहाँ से इनसे बहु-सिर्देश के पहिनने के हैं। वहाँ से इनसे बहु-सृत्य वस्तुहाँ ते छ। या री

बुनरी बेरबा-के सहाँ से आया ? कंटी हवायात्र करना है कहा ? बोरी वारके, नाम है :

तीमरी-इमनी वर्ष कोशे केसे करी, कहाँ करी। यह इस्से सर्हें रावः !

चौथी—यह तो निर्ध्य है यह साधारण पर की चौरी का लाच नहीं। राज्यहल से चौरों छरके चाया है।"

पॉबर्वा बेर्या-राजा की चोरो क्षिप नहीं सकती। असी राज-

क्रमचार पार्वाः । अस्पत् र वे अस्त । अस् इन्हीं पर राहका देशे । इस स्वको नारकार से इन्हें देशे

र किली-स्टाइस स्थाने इस्ते दा क्या उपाय करें। इसरी-साम नहीं में प्रता, प्रकड़ा में। यह अवश्य लायगा । इस सद भी इसके अध्या म्यादी आवेगी। इससे अच्छा तो यहाँ है इस राव इसे स्थानय प्राकृत्युवदा नगरी हैं। समी सार्च

ापने घरा—र् वहीं मधीलाभ उताय है। इसे भनपट मुण दिन्। ही, पण पर श्राचेन ही लाग तम सब सिल्या दर्ने सारका दहीं ग्रह्मा खीक्तर शाह हैंगी। हस परिसे ग्रह्मा खोड़ सें!

्रिं। तं तो हे ति तका गहरा को दा। है। ते उसे लायविक सुरा तत कर दिया। वह स्रायंत करके अचेन तोका पड़ गया। ये ते उसे खाट पा रश्यों, से बाँद दिया। की गउसका गता शिटते लगों। उसकी जो स निकल आयों, किन्तु गण नहीं निकते, तब रत्त हुए लकड़ी के पहले उसके सुख के अग दिये। यहां हुईशा से यह सन, तब उसे सबसे गहुई में नाइकर उसे पाट दिया। गताकाल दें निस्न भिक्त स्थानों की भाग गयीं। धुन्युकारी मरका सर्वका प्रेट वन गया।

#### <u>রললোলা</u>

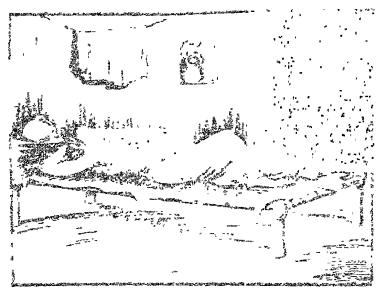
न्दर यर रानिका पाँच रिवा है ति चौरि धन पट तिनिहें। निवि चान्यण अधिक निवि. यथ करियो सोच्यो सनिहें॥

#### द्धावा

तनु कांस सुन्यमहं अगिनि भरी जीवन विनु कीनों। गाड़ि मूमिम भनीं बॉटि थन सबने कीन्हें।। देन तथा सम मेन सम्भ निष्नित्य देखीति। कबहुँ विक्र विश्वास हरे मोहे हिंद कुल्टनिके। बुक्कुकारे यह ब्लाना सहि क्रानि दुक तन निज्ञ गयो। नीच करन कथन कुटिला बेद स्थानक मेरि स्थे।

#### 对对对一型5亿

[ स्थान—ऋगमदेव का बीवृत वना गिजेन घर ] [बीर्थ-यात्र[ से गोवर्ण लीटकर आने हैं। अपने यर यी देखी दुवंशा देखवर बुखो होने हैं। यर की साइ-सुद्दार कर लीप



्रादि गोवर्ष को देन हुन्द्रकारी ने कान ; कर गाति में सोते हैं। रात्रि से उन्हें केड़ा दिखायी है, कभी हायी, नैसा, जलती करिन दिखायी है। इस भर में वहीं विलीग है। एक एक इन्हें एक आना पुरुष दिसका सुरुष अला है का दिला है दिस में इन्हें समझ गर्थ यह कोई कारी देन हैं। उन्होंने अन दूरण की हैं। का एक उनके इसके विकास नह का बोलाने में समसे हुए।

可谓"一种"

रेन-प्रेश के समारा संपन बोच माई इंस्ट्रकारे हैं।

if the material of the first partial garden

प्रसम्भागे अभे प्राप्तस्य है। भैका, क्षेत्रे बढान का बोर्ड बगाय करों

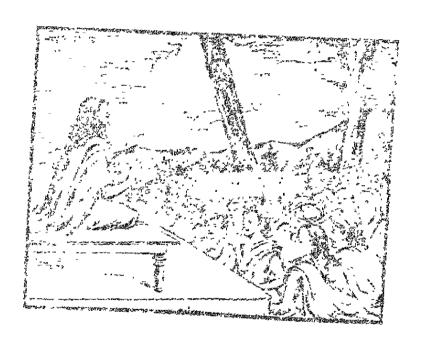
मोक्या-नीट सुना नी या पुरुष्यी शुरवु ही गर्मा है। मैरे सुनहारे विभिन्न समा में साज भी किया।

हेन-भेका, सेरे पाप इनने अबङ्गार हैं कि सैकड़ों राजा आद से की सेरे उद्धार असमय है। कोई दूसरा ही उपाय सीची व तुल में: पोण्डन हों .

गोक्षण--हनदाः हत से:ब्गा ! तुम निश्चिम हो ज'ओ !

[ रेन का व्यन्तर्शन हो तासा। दूसरे किन गोक्षणे से व्यवसी सरभ्या के लूबे की गरि को रोक कर उनसे धुन्धुकारी के उद्धार का अपन्य (हा: ]

्मूर्य सण्डल सं धारफुट राणी निक्ती—श्रोमद्शाण्डत के खपार से टी उसका रखार सम्भव है : सूर्य दाणी सभी की मुत्रायी दी । सभी ने साथ-ताथ सप्ताह की वैद्यारियों की । उच्चासन रत बैटकर गोक्षे समार की कथा कहने लगे। प्रेत एक सान पोर या गोम की वहीं में बैठकर जमार कुनने लगा। सान दिन में सानी योग पाद गाया। प्रेन निश्य करा प्राथम करके अवने चला गया। सबको प्रदा नगरपर्य दुवा। )



े उन्हारों पेन कर में केश गोकण के गया उन वहां है। कुछ लोगों ने कहा—कथा तो नशों ने सुनी किन्तु गोकणेला ने कारने भाई थीं हो बेंबूफ पहुँचाया। यह तो पदसात है। -सारं, बाया अवधा का फल आवना के ब्रह्मार एन्युकारं न तन्स्य होकर कया सुनी इसर सुनेक हो गर्या । श्राय तुम की तन्मयगा से सुने मी सुनेक हो जायसी :



# [ भृत्युकारो-उद्धार ]

नः गोलपेजो . आप दूसरा समाह सुनावें हम स रियां करते हैं :

दने पुतः समाह् की तैयारियों की श्रवके सहाह ातये विमान श्राय । साञ्चात अगवाम् ही प्रक राम देते को । सब विशोर दोकर पाने लगे ।

## नाग्यन भव-तन स्टून हर्या

नार शहन आपने धराम प्रस्त भवे भवराशे १० । भारा । राम्, नार गण गरा पहानवर, कोट सुद्ध विस्मारा । भन्नां गुन्दान स्तेश्वर, गुन्ध हान्नि स्तिराम प्राप्ते । २०, भारा । अन्यान प्रदेशे ए अगासन, भन्ति दिस्ति स्ति दश्य । पान प्राप्ता स्वा प्रदेश प्रस्तु । यस्ति होष्ट्र तस्त्रारो । ३ भाष । स्व-प्राप्ता स्तिर्म सेन्त स्त्रा अस्ति हिस स्युवारो । १४। भारा ।



क्षेत्रज का युगरा मनाह ]

िसद लोग अय-जयकार करते हैं। अन्त में सब गाने दूए जान रे हुए, जातार में पिसीर शेर्स हुए कारनी करते हैं।

# to whom y

मानावन चनित जासून गोज । जावनी सब मिलिसे और दयाके साराज है पर्चन्द्र गर्ड अजन निर्म पर सार्विः यसन दुख कर मुचाके विष्टु, निस्ति वे के के के लेट की रासको रसना करिया गानः वर्षे सन्बंधन भूगीन भारत नयन निकार एवं वन भगवान होगाओं कोतन जिल्हा वानि अब व्यक्तिक्तः आहे. उनक तमु महरो है बाद देव सब व्यङ्गति हाते. सबसे सम् विश्व वे वर्ड प्रतिकार एका सिन्ते भागानिको निष्क स्तानसङ् सात महत्रहें हाला हिन कहा, श्वारत का बाबन नहीं होते के यह नवर क्या करते हैं। यह नव नवर हैं हार्य रहुत-रह रह श्वह यको बारनी 7277

